

सत् नाम साक्षी



स्वामी टेऊरामजी



स्वामी सर्वानन्दजी

गुणगान



स्वामी शांतीप्रकाशजी



सत् नाम साक्षी

सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज
की याद में संकलित भजन

गुणगान

प्रकाशक:

प्रेम प्रकाश आश्रम

सूरत.



सत् नाम साक्षी

गुणगान

सेवा में:

अशोक प्रकाश, बड़ौदा.

तिथि : १९-४-२००३

स्वामी टेऊराम मेला

प्रथम संस्करण : २०००

भेटा : रु.५.००



सत् नाम साक्षी

श्लोकः सेवा कर्मणि संलग्नं, परे ब्रह्मणि संस्थितम्।
श्री स्वामी शान्ति प्रकाशं, सद्गुरुं नित्यं नमामि॥

वन्दन करते हैं-२

हम सब वन्दन करते हैं-२

जो सेवा का धर्म सिखाते,

कर्म धर्म का मर्म लखाते,

पतितों को भी पार लगाते,

उन कर्मयोगी गुरुदेव,

स्वामी शान्ति प्रकाश को हम सब वन्दन करते हैं।

हम सब वन्दन करते हैं-२

वन्दन करते हैं-२



~❁❁❁ दोहे ❁❁❁~

- १-जग हितकारी जगत में-देखा संत विशाल ।
सत्गुरु शांति प्रकाश जी-दाता दीन दयाल ॥
- २-धर्मरूप बने धरनि पै-करने धर्म प्रचार ।
सत्गुरु शांति प्रकाश को-वंदन बारम्बार ॥
- ३-पतितों की पीड़ा हरे-दुखियों के दुख दूर ।
सत्गुरु शांति प्रकाशजी-करत कष्ट काफूर ॥
- ४-सत्गुरु शांति प्रकाशजी-करते पर उपकार ।
दीन हीन निर्बल दुखी-पातक अधम उद्धार ॥
- ५-भक्तों की भयता हरे-भरम करें चकचूर ।
सत्गुरु शांति प्रकाश जी-दे आनन्द भरपूर ॥
- ६-परम प्रेम के पुंज हैं-परम मनोहर रूप ।
सत्गुरु शांति प्रकाश जी-माधुरी मधुर स्वरूप ॥
- ७-सत्गुरु शांति प्रकाश की-बड़ी अनोखी बात ।
सरल सरस सुखरूप हैं-मधुर मधुर मुस्कात ॥
- ८-सत्गुरु शांति प्रकाशजी-आप सर्व आधार ।
भवजल भारी लहर से-मोहि करो प्रभु पार ॥

सत्नाम साक्षी

~*~ ॐ भजन-१ ॐ ~*~

तर्जः-सिक में आहिनि फायदा.....

थलु:-उमिर वढी शल ईश्वर दींदो-स्वामी शांति प्रकाश खे ।

कैम्प कल्याणी वेही वसाई-शंकर ज्यां कैलाश खे ।

१- मेला मल्हाए रासियूं रचाये-सब जी पुज्जाए आश खे ।

दुखियनि बुखियनि जी खटंदो रहे शल-सदा सदा शाबाश खे ॥

२-सती जती थी रहे सदाई-पाये पद अविनाश खे ।

मान मरतबो माणे मिठड़ो-खुदी विजाए ख्वाहिश खे ॥

३- अंदर जी टेऊराम स्वामी-दीद दींदो शल दास खे ।

गुरु भक्तिअ में भिनो रहे शल-नीहूं रखी नरमाइश खे ॥

४-काया कंचन कंदुसु गुरू-ऐं सालिम रखंदुसि स्वास खे ।

ईश्वर शाल ओनाईंदो-पहिलाज जी हिन अरदास खे ॥

~*~ ॐ भजन-२ ॐ ~*~

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सुखन जो भण्डार ।

करे महिर सभते अहिड़ो आहे दातार ॥

१-गरीब अनाथ सब खे वसाए ।

दाता थी हलाए, पाए को न पार ॥

२-सारो जगु सारहाए-जिते पेर पाए ।

सुजा घर वसाए-चवे बुढिड़ो ब्रार ॥

३-भला भागु तिन जा-जे घर में घुराड़नि ।

पाप जनमनि लाहे द्रिसे थो संसार ॥

४-जीवन मुक्त जाई-वेही खबर बुधाई ।

कई सतगुरु कृपा-करे को वीचार ॥

ॐ भजन-३ ॐ

तर्जः-ये मौसम रंगीन समा...

थलुः-गुणी गुणवान ज्ञानी आ-माण हूंदे निर्मानी आ।

स्वामी शांति प्रकाश सचारो-लाल सचो लासानी आ॥

- १-आहे दिल जो संत उदारी-जंहिंखे चाहिनि था नर नारी-वाह जो प्रेम आ।
फहले भोजन जो भण्डारो-खाए पंहिंजो चाहे धारियो-अहिड़ो नेम आ।
संतनि सां सहचारी आ-पूरन पर उपकारी आ, स्वामी शांति प्रकाश..
- २-आहे आश्रम आनंद वारो-को दिसंदो भागनि वारो-जंहिंजो भाग आ।
थिये गऊशाला जो दर्शन-करे दर्शन दिल थिये प्रसन्न-सुहिणो माग आ।
नाम जपे ऐं जपाए थो-विद्या पढ़े ऐं पढ़ाए थो, स्वामी शांति प्रकाश..
- ३-हित सत्संग थिये सुखदाई-हित पहुंचनि माई भाई-वाह जो रंग आ।
हित उपदेशक बि अचनि था-पाए छेरियूं भगत नचनि था-वाह सत्संग आ।
साई परमानन्द जो प्यारो आ-मोहिनी मूरत वारो आ-स्वामी शांति प्रकाश..

ॐ भजन-४ ॐ

तर्जः-यशोमती मैया से बोले नंदलाला...

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश आहे संत सचारो।

कल्याण कैम्प जो दरवेश दुलारो, संत सचारो॥

- १-मुहिणी आ मूरत जंहिंजी मिठड़ी आ ब्रोली।
दिनी राधेश्याम जी माता जंहिंखे लोली।
जपे ऐं जपाए वेठो नाम जो नारो, संत सचारो॥

२-दानिनि में दानी दाता निहठो निमाणो।

अबोझनि गरीबनि जूं परणाए थो नियाणियूं।

द्विये दान सभखे दाता भरियल आ भण्डारो, संत सचारो॥

३-जोति अंदरि जी ब्रियो सत्गुरु सहारो ।

मुश्की मिले थो सभसां अखिड़ियुनि जो तारो ।

करे थो भलाई सभसां रही जग मेंन्यारो, संत सचारो ॥

~*~ ❧ भजन-५ ❧ ~*~

तर्जः-साजन मेरा उस पार है....

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश आ-सभनी सुखनि जी रास आ ।

१-सिंध जी धरती संहारी आ-चक जी नगरी भागुनि वारी आ ।

जिते जोगिनि जो वास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

२-धन धन पिता भागु वारो आ-माता जो भागु भी भलारो आ ।

तिनजे अडण थियो हुल्लास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

३-नंढपिण खां संतनि जे संग में-मन खे रंगियो राम रंग में ।

कयो भक्तिअ जो विकास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

४-सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी-सेवा कई सुखधाम जी ।

गुरु भक्ति कई खास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

५-सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द सां-नींहूं निभायो आनन्दकंद सां ।

थियो प्रभूअ दर पास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

६-सत्गुरु जी गादी वसाई आ-सत्संग जी मौज मचाई आ ।

प्रमिनि जी पूरी कई प्यास आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

७-जोति मां जोति जगाए वियो-स्वामी हरिदासराम में समाए वियो ।

मनोहर अजब इतिहासु आ-सभनी सुखनि जी रास आ ॥

~❧~ ❧ भजन-६ ❧ ~❧~

तर्जः-ये हरियाली और ये रास्ता...

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश अवतार आ ।

दीन दयालू अति कृपालू दीन बंधू दातार आ ॥

१-सत्संग में मन वृत्ति लगाई-हरचूराम जी सेव कमाई ।

टण्डे आदम गुरु भक्ति पाई-सतगुरु टेऊराम जी आसीस वताई ।

दिठो संतगुरु में सत्कर्तार आ, दीन दयालू....

२-नंदपण खां हरि नाम जपियाई-गुरु मूरत जो ध्यान धरियाई ।

कण कण में भगवान दिठाई-घर घर प्रेम प्रचार कयाई ।

कयो सत्नाम साखी उच्चार आ, दीन दयालू....

३-अहिड़ा जोगी विरला थींदा-हिन धरतीअ ते मुश्किल ईंदा ।

ढाणु सचो ददड़नि खे दींदा-संगति खे सति राह दसींदा ।

सदा मनोहर तिनिजी जयकार आ, दीन दयालू....

~❧~ ❧ भजन-७ ❧ ~❧~

तर्जः-मुंहिंजो नीहुं लगो नंदलाल सां....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश महान आ-जुण सचपच ही भगवान आ ।

१-शंकर वांगे ध्यान लगाये-सत्नाम साखी नाम जपाए ।

जंहिं तारियो सजो त जहान आ ॥

२-विष्णू रूप थी पाले सभ खे-दीन गरीबनि महुताजनि खे ।

दिनो अन्न धन ऐं सामान आ ॥

३-ब्रह्मा थी जंहिं ज्ञान सुणायो-प्रेम प्रकाशी थी शान वधायो ।

कयो वेदनि जो वखियाण आ ॥

४-कृष्ण जीअं कई गायुनि सेवा-दिना सभिनि खे मिठड़ा मेवा।

दिनो सभखे गीता जो ज्ञान आ ॥

५-राम ज्यां रखपाल थिया से-संतनि में सिरमोर हुआ से।

दिनो सभखे जंहिं सन्मान आ ॥

६-दास अशोक छा महिमा गाए-चरननि में थो सीसु निवाए।

जिन तां तन मन धन कुर्बान आ ॥

~*~ ❧ भजन-८ ❧ ~*~

तर्जः-पल पल याद पवे थो मूंखे....

थलु:-परम ज्ञानी परम ध्यानी-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश।

१-पर उपकारी पर दुखहारी-पर सुखकारी सत्गुरु हो।

परम उदारी परम भण्डारी-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

२-दीन दयालू परम कृपालू-करे निहालू सत्गुरु थो।

सब प्रतिपालू सब रखपालू-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

३-परम प्यारो सदा न्यारो-सब जो सहारो सत्गुरु हो।

सदा बहारो गुल गुलज़ारो-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

४-सर्व स्नेही नाम जो नेही-दिल में वेही सत्गुरु वियो।

अशोक आयो धारे देही-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश ॥

~*~ ❧ भजन-९ ❧ ~*~

तर्जः-जन्म लही अजु जोगी आयो...

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश प्यारो।

हिन धरतीअ ते देह धरियाई, कृष्ण जो अवतारो ॥

१-रक्षा बंधन जे पावन डीहं ते-रक्षा करण लाइआयो।

मन मुंहिंजे खे मोहे छदियो जंहिं-मोहन मिलाइण वारो ॥

- २-प्रेम प्रकाशी पंथ वधायो-प्रेम जो झण्डो झुलायो ।
 सभिनी खे जंहिं प्यारु दिनो हो-मालिक हो मनठारो ॥
- ३-सत्नाम साखी जय श्री कृष्ण-मंतर जाप जपायो ।
 दान दया जो देई मूंखे-पंहिंजो शाल बणायो ॥
- ४-देश विदेश जा प्रेमी पुकारिनि-अचो तव्हां हिकवारी ।
 दर्शन सां मन थिये थो प्रसन्न-अशोक सीस निवायो ॥

~❧~ भजन-१० ~❧~

- तर्जः-जन्म लही अजु जोगी आयो.....
- थलुः-जन्म दींहं जोगीअ जो मनायो ।
 देह धरे धरतीअ ते स्वामी, शांति प्रकाश आ आयो ॥
- १-रक्षा बंधन दींहं मंगल जो-सावण पूरण मासी ।
 सिंध देश जे चक नगरीअ में-प्रभू पाण पधारियो ॥
- २-पिता आसूदाराम आ जंहिंजो-संत सेवी निष्कामी ।
 जीजल जुगल जगुत खां न्यारी-तंहिं घर सत्गुरु आयो ॥
- ३-नंढिपण खां घरबार त्यागे-सत्गुरु शरणी आयो ।
 नाम वठी स्वामी टेऊराम खां-पाण जपियो ऐं जपायो ॥
- ४-गुरु कृपा सां मिटयो अंधेरो-अनभइ अखिड़ियूं खुलियूं ।
 जगुत समूरो फानी ज्ञाणी-सब खे नाम जपायो ॥
- ५-सत्गुरु सर्वानन्द साहिब जी -गादी जंहिं हुई वसाई ।
 देश विदेश में प्रेम प्रकाशी-झण्डो जंहिं त झुलायो ॥
- ६-जगुतर जे कल्याण करण लइ-सत्गुरु आयो अवतारी ।
 मिठड़ी बाणी बोले सभ सां-सब खे गले लगायो ॥

~❖~ ❧ भजन-११ ❧ ~❖~

तर्जः-दूलह दरियाह शाह मुंहिंजी...

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश साई-हिरदे जोति जगाइजो।

हिरदे जोत जगाइजो-साई मूंखे कीन भुलाइजो ॥

१-भवसागर मां पार करण लइ-साई तूं मल्लाहु आहीं।

तरी न ज़ाणां आउं अयाणी-ब्रांहं दुई त उकारिजो ॥

२-लखें भलायूं आहिनि अब्हांजूं-ही भी नंगड़ो निभाइजो।

साई पंहिंजीअ महिर मया सां-जन्म मरण खां छटाइजो ॥

३-पतित पावन नालो अब्हांजो-दया जी दृष्टि धारिजो।

दासु ब्रह्मानन्द बार पुकारे-तंहिंखे कीन विसारिजो ॥

~❖~ ❧ भजन-१२ ❧ ~❖~

तर्जः-घर आया मेरा परदेसी..

थलु:-शांति प्रकाश साई चक वारा-जंहिंतां वजूं असीं बलिहारा।

१-ज्ञानियुनि में पूरण ज्ञानी-ध्यानियुनि में पूरण ध्यानी।

भक्तिअ भाव जा भण्डारा ॥

२-जोगीअ जोग कमायो हो-ज्ञान जो दीप जगायो हो।

साख डींदा सिजु चण्डु तारा ॥

३-जोगी जीअ जो जियारो हो-हिन्द सिन्ध में हाकारो हो।

जग में रहिया जग खां न्यारा ॥

४-महिमा साईअ जी न्यारी आ-ब्रह्मानन्द बलिहारी आ।

कामिल हुआ करणीअ वारा ॥

तर्जः-मुंहिंजो नीहु लगो नंदलाल सां.

तलुः-मुंहिंजो सतगुरु शांति प्रकाश आ-जंहिंजो दर्शन सब सुख रास आ।

१-द्वीह रात मां रहियुसि थे मांदो-दया करे गुरु संग में आंदो।

दिनो गुरु मंतर जो खासु आ ॥

२-सतगुरु जो जदहिं नाम कमायुमि-भाग वारो तदहिं पाण खे भांयुमि।

दुख दर्द समूरो नास आ ॥

३-सतगुरु जो जदहिं वर्तुम सहारो-मिटिजी वियड़ो मन जो मूंझारो।

थियो हिरदे में त हुलास आ ॥

४-सतगुरु जी सदा सेव कमायां-मरण घड़ीअ ताई नीहुं निभायां।

ब्री मन में न काई आश आ ॥

५-कयो आसीसा भाउर भेनरु-राजी रहे शल मूँते सतगुरु।

इहा प्रभू मुंहिंजी अर्दास आ ॥

तर्जः-दिल लूटने वेले जादूगर....

थलुः-मुंहिंजो सतगुरु शांति प्रकाश मिठो-संसार सजे में सूंहारो आ।

अची पंजे नंबर में पाण दिसो-मन मोहिणो मन्दिर उजारो आ ॥

१-जिते सत्संग जी सदा गंगा वहे-जेको टुब्री दिए थो लाल लहे।

जेके सिक सां करनि था सेवा अची-थिये बुलन्द तंहींजो सितारो आ ॥

२-प्रभात जो वेद वख्यान हले-समझण सां आतम ज्ञान मिले।

गुरु ज्ञान वैरागु जी मूरत आ-ऐं भक्तिअ जो त भण्डारो आ ॥

३-जिते वर्सियूं मेला खूब मचनि-कवि संत गुणीजन रोज़ अचनि।

मोटे स्वाली खाली कीन हितां-गुरु दीन दुखियनि जो सहारो आ ॥

४-नकी ज्ञाति पुछनि नकी पाति पुछनि-झटि नाम संदो था दान दियनि।

ऐं सोहम शब्द जी समझ डई-कयो देह खां प्रभू न्यारो आ ॥

~*~ ❧ भजन-१५ ❧ ~*~

तर्जः-जीजल मूंखे जोगीअड़ा....

थलुः-सचो स्वामी शांति प्रकाश-प्रेम प्यालो पियाए वियो।

मुरझायल मन त खिलाए वियो॥

१-मिठी मिठी बोली बोले-खिड़की अनभड़ जी खोले।

आतम जो लाल लखाए वियो॥

२-दुई पंहिंजो प्रेम सचो-चयो राम रंग में रचो।

ज्ञान वैराग्य जगाए वियो॥

३-सुणाए सत्संग सुठो-दुई कृष्ण नाम मिठो।

राधा मोहन सां मिलाए वियो॥

४-करे देश-विदेश रटन-कयो सभनी खे परसन।

सत्नाम साखी जपाए वियो॥

५-प्रभू मुंहिंजो भाग खुलियो-अहिड़ो सत्गुरु मूं मिलियो।

जम जी फास मिटाए वियो॥

~*~ ❧ भजन-१६ ❧ ~*~

तर्जः-दिल लूटने वेले जादूगर....

थलुः-मुंहिंजो सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-सभ संतनि में सोभारो आ।

अजु जन्म उन्हीअ जो मल्हायूं था-जो सिंधू नगर जो जियारो आ॥

१-आहे मुंहं में संदनि अब्दुत मणिया-जुण पाण कृष्ण जो रूप बणिया।

गुण कहिड़ा गुणे कहिड़ा गुणियां-प्रेमिनि जो प्रान प्यारो आ॥

२-जेके शरण गुरूअ जी आया थी-थिया भाग उन्हनि जा सवाया थी।

तिनि चार पदार्थ पाया थी-गुरू लोक बिन्ही रखवारो आ॥

- ३-अचो भाउर भेनरु सभई मिली-कयूं सेवा सत्गुरु जी त मिली ।
दींदो मुक्ति सभिनि खे खिली खिली-इहो भवजल तारण हारो आ ॥
- ४-जंहिंजो भक्तिऐं ज्ञान विशाल अथई-जंहिंखे दीन दुखियनि जो ख्याल अथई।
इहो अंदर बाहिरि लाल अथई-प्रभू सब सां मिलयल ऐं न्यारो आ ॥

~*~ ❧ भजन-१७ ❧ ~*~

तर्जः-आधा है चंद्रमा रात आधी...
थलु:-स्वामी शांति प्रकाश अवतार आहे।
हू त कृपा कंदड़ करतार आहे, दातार आहे।

- १-आहे प्रेम अंदर में समायल-करिन कुर्ब में सब खे घायल।
जो हिन दर अचे, सो रंग में रचे-साईं भक्तिअ भरियल भण्डार आहे ॥
- २-जिन्हीं नीहूं रखियो आ नातो-हिन प्रीतम मां सब कुछ पातो।
तिनि खे काई कमी, तो कीन दिनी-मूं अहिड़ो दिठो चमत्कार आहे ॥
- ३-जदहिं खोलिनि था ज्ञान भण्डारा-दुख दर्द मिटी वजनि सारा।
कोई वचन खणे, भाग वारो बणे-साईं सब सां मिलयल कान धार आहे ॥

~*~ ❧ भजन-१८ ❧ ~*~

तर्जः-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा.....
थलु:-जोगीअड़ा ओ जोगीअड़ा, जोगीअड़ा ओ जोगीअड़ा।
जोगीअड़ा तूं आउ मुंहिंजा जीअ जियारा।
स्वामी शांति प्रकाश मुंहिंजे नेणन जा तारा ॥

१-टेऊराम सुखन धाम तोते महिर आ कई।
सर्वानन्द आनन्दकंद जी तोते नज़र आ कई।
गुरु भक्तिअ सां, भरियल हुआ, साईं संहारा ॥



२-तो प्यार ऐं दुलार दुई पंहिंजो आ कयो।

शरीबनि अनाथनि जो साईं घरडो आ भरियो।

हिरदे सां लगाए मुंहिंजा मेटियव मूंझारा ॥

३-कर्मयोगी जोगी वाह जो जुहिद तो कयो।

ज्ञान ध्यान विज्ञान सां संसो थे हरियो।

प्रेमा भक्तिअ द्वारा कयव बसंत बहारा ॥

४-स्वामी शांतिप्रकाश हुआ संत ज्ञानी।

सूंहा सिंधी कौम जा हुआ राणा रूहानी।

करुणा मैत्री प्रेम जा हुआ भरियल भण्डारा ॥

~*~ भजन-१९ ~*~

तर्जः-होठों से छूलो तुम....

थलु:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश, शरणागत मैं तेरी।

प्रभू आप मुझे मिल गये-खुल गई किस्मत मेरी ॥

१-अज्ञान अंधेरे से-दिन रात मैं भटक रहा।

मुझको ना सूझ पड़ी-माया में अटक रहा।

जब कृपा दृष्टि करी-कटी जन्म मरण फेरी ॥

२-प्रभू प्रेम प्रकाशी हो-तुम सब सुख रासी हो।

तुम ज्ञान के सागर हो-और योग अभ्यासी हो।

जप रोम रोम से राम-बन गई दुनिया चेरी ॥

३-गऊओं के रखवारे, वृद्धों को सहारे हो।

संतो के प्यारे हो-सत्गुरु के दुलारे हो।

करुणा करने में प्रभू-इक क्षण न करो देरी ॥

४-जो शरण तेरी आया-उसे पार है पहुंचाया।

प्रताप कहे गुरुवर-मैं तेरी शरण आया।

सदा गुन मैं गाता रहूं-चाहे दुनिया बने वैरी ॥

~❁~ ❁ भजन-२० ❁ ~❁~

तर्जः-वादा न तोड़ तू वादा न तोड़...

थलु:-पार लगाइ आहीं मल्लाहु।

स्वामी शांति प्रकाश आहीं शाहु.....

१-किश्ती पुराणी मुंहिंजी आहे विच वीर में।

लहिंरूं ऐं लोढा आहिनि सीगर जे सीर में।

मुंखे दे तूं पंहिंजी पनाह...

२-शरण आए जी साईं लाज रखीं थो।

पार करे तूं सभजा कष्ट कटीं थो।

हिक तूं ही आहीं हमराहु.....

३-नारायण मां तो दर पलव झलींदुसि।

आश पुज्जाइजि मोटी मूरु न वेंदुसि।

रखियो शंकर आहे वेसाहु...

~❁~ ❁ भजन-२१ ❁ ~❁~

तर्जः-आहियां आहियां मां पंहिंजे यार जी...

थलु:-कजांइ पलव सभिनि जा पास तूं।

सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश तूं॥

१-संगति सज्जी तोखे अर्ज करे थी-झोल झले तोखां महिर घुरे थी।

कजांइ कंहिंखे कीन निरास तूं...

२-तन में शक्ति मन में भक्ति-साईं सभ खे दे तूं सुमती।

दुख दर्द कजांइ सभ नास तूं....

३-ब्रचड़नि ते करि ब्राझ तूं साईं-नियाणिनि जो भलो भागु बणाईं।

पति पीरीअ जी रखु खास तूं.....

४-भव सागर मां पार कजांइ तूं-नंग नारायण जो रखजांइ तूं।

मजु शंकर जी अर्दास तूं....

ॐ ॐ ॐ
~*~ ॐ भजन-२२ ॐ ~*~

तर्जः-मुंहिंजो गुरू त पीरनि जो पीरु आ...

थलु:- मुंहिंजो गुरू त गरीबनिवाज़ आ।

स्वामी शांति प्रकाश महाराज आ।

कंदो संगति सज़ीअ ते बाझ आ।

सागियो हीउ श्याम सुंदर-२ मुंहिंजो सत्गुरु...

१-जंहिंजे रा रा में श्री कृष्ण-जंहिंजे तन मन में मन मोहन।

प्रेम जो सागर आ, मुंहिंजो सत्गुरु...

२-जंहिंजी बाणीअ में आनंद आ-जुण सागियो मुरली मुकुंद आ।

भजन जी मौज करे, मुंहिंजो सत्गुरु...

३-जंहिंखे गायूं पयूं त पुकारिनि-खणी न्याणियूं नेण निहारिनि।

सभिनि जी सार लहे, मुंहिंजो सत्गुरु...

४-जंहिंजो अमरु नारायण नालो-आहे शंकर शान निरालो।

करे आसीस सदा, मुंहिंजो सत्गुरु...

ॐ ॐ ॐ
~*~ ॐ भजन-२३ ॐ ~*~

तर्जः-दीदी तेरा देवर दीवाना...

थलु:-प्रभूअ जे नाम जा दीवाना-स्वामी शांति प्रकाश निमाणा।

सचे गुण ज्ञान जा खजाना-स्वामी शांति प्रकाश निमाणा।

गरीबनि जे दिल जा तराना-स्वामी शांति प्रकाश निमाणा।

१-कर्मयोगी बणजी, कई निष्काम भक्ति।

प्रभूअ जा फरिशता, वचन में हुई शक्ति।

संतनि जा हुआ साईं ब्रथा ब्रान्हा, स्वामी..

२-देई प्यार अहिड़ो, वयें दिलड़ी खणी तूं।
 मोहे मन संगति जो, वयें जादू हणी तूं।
 शमा तूं असीं तुंहिंजा परवाना, स्वामी
 ३-करे याद दुनिया, तुंहिंजूं लख भलायूं।
 विसारियूं नारायण तुंहिंजूं कीअं सिख्याऊं।
 शंकर तुंहिंजा लख शुकुराना, साईं....

~❧~ भजन-२४ ~❧~

तर्जः-आ लौटके आज्ञा मेरे मीत.....
 थलु:-अचु सत्गुरु शांति प्रकाश-तोखे अजु संगति सम्भारे थी।
 तुंहिंजे दर्शन जी दिल में आ प्यास-संगति खणी नेण निहारे थी ॥
 १-तुंहिंजे प्रेम में थी मां दीवानी-दुनिया जा बंधन तोड़ियां।
 मीरां वांगुरु मां थींदसि जोगियाणी-नातो गुरु तोसां जोड़ियां।
 हाणे देरि न करि घनश्याम-जुदाई तुंहिंजी मारे थी ॥
 २-गायूं पयूं सारिनि, गोढ़ा पयूं गारिनि-राहूं पयूं तुंहिंजूं निहारिनि।
 न्याणियूं निमाणियूं बचड़ियूं वेचारियूं-पल पल पयूं तोखे पुकारिनि।
 अची सत्गुरु लहु तूं सम्भाल-ओट खपे तुंहिंजे सहारे जी ॥
 ३-दीननि दुखियनि ऐं अनाथनि मोथाजनि सां-बाबल तो कई हुई भलाई।
 विछड़ियल मिलायइ, बिगड़ियल सुधारियइ-प्रेम जी बंसी वजाई।
 तुंहिंजो वचन हुयो वरदान-करामत तुंहिंजे इशारे जी ॥
 ४-शंकर मूंखे विश्वास आहे-अजु संगति जी अर्जी मजींदें।
 नारायण अगर जे हाणे न ईदें-त सुपने में दर्शन दीन्दें।
 लख थोड़ा तुंहंजा भगवान-पैज रखु पंहिंजे प्यारे जी ॥

ॐ ॐ ॐ
~*~ ॐ भजन-२५ ॐ ~*~

तर्जः:-मिलता है सच्चा सुख केवल...

थलु:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-रहे नाम चमकता सितारों में।

तेरे नाम की खशबू फैली है-दो जहां के चमन बहारों में॥

१-चाहे मुरली कितनी मधुर बजे-चाहे देवों के भी साज सजे।

नहीं जादू साईं की बाणी सा-कोयल की मीठी गुंजारों में॥

२-ज्यों ध्रुव है चांद के टुकड़े पे-त्यों तेज सजे तेरे मुखड़े पे।

नहीं नूर नूरानी सत्गुरु सा-इस गगन के चांद सितारों में॥

३-तेरे चरणों की रज पाकर के-गंगा भी पावन कहलाये।

मेरे गुरुवर सबसे न्यारे हैं-ज्यों कृष्ण हुए अवतारों में॥

४-जब तक ये चांद गगन में रहे-सूरज में जब तक अग्नि रहे।

मेरे सत्गुरु साईं अमर रहें-रहे गूंजी आवाज़ प्यारों में॥

~*~ ॐ भजन-२६ ॐ ~*~

तर्जः:-मेरे देश की धरती.....

थलु:-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश सदा मन मन्दिर में मुसकाये,

मेरे मन को भाये।

आ जाओ मिलकर सारे यहां-सत्गुरु का जन्म मनाये॥

१-ऐसी मोहनी मूरत कहीं नहीं-जो देखे वो खो जाता है।

इक मीठी नज़र जो मिल जाये-तेरे चरणों का हो जाता है।

इतनी पावन है रज तेरी-हम नित नित सीस झुकाते हैं॥

२-जब भक्तों पे हैं कष्ट पड़े-तब रूप धरे तुम आते हो।

कभी राम बनो कभी कृष्ण बने-कभी नरसिंह तुम बन जाते हो।

अब साईं ने शिशु रूप लिया-ये देख देख हर्षाते हैं॥

३-अब दिल में साईं ऐसे बसो-जैसे राम के मन में सीता है।
अब नैनों में साईं ऐसे बसो-जैसे कृष्ण के मुख में गीता है।
हर धड़कन पै हो नाम तेरा-ये सपना सभी सजाते हैं॥

~*~ ❧ भजन-२७ ❧ ~*~

तर्जः-आधा है चंद्रमा रात आधी.....
थलुः-सत्गुरु शांति प्रकाश प्यारे हैं-वो तो मेरी आंखों के तारे हैं,
आधारे हैं.....

१-इक बार मिला जो उन्होंने से-मिट गई प्यास जन्मों से।
जब चरनी पड़ा, मेरा तन मन ठरा-मिटे मेरे सभी अंधियारे हैं॥
२-पूरे विश्व को शोधके देखा-पर आप जैसा नहीं पेखा।
आप राम बने, आप श्याम बने-आप मेरे लिये अवतारे हैं॥
३-प्रताप सदा महिमा गाऊँ-पूरे विश्व को आज सुनाऊँ।
मेरे जीवन हैं वो, मेरे सब कुछ हैं वो-मेरी बार बार नमस्कारे हैं॥

~*~ ❧ भजन-२८ ❧ ~*~

तर्जः-देखे तेरे संसार की हालत....
थलुः-सूरज बनकर जग में चमके-पूर्ण पुरुष भगवान।
स्वामी शांति प्रकाश महान...२
१-सिर पर पगड़ी बांधे ऐसे-राजा महाराजा हों जैसे।
देख देखकर प्रेमी हर्षे-फूले सकल जहान।
२-मुख से वाणी बोले ऐसी-मिश्री घोल पिलावें जैसी।
आनन्द की है बरखा बरसी-भीगे तन मन प्राण॥
३-देश विदेश दी शिक्षा ऐसी-मात पिता दे बढ़कर वैसी।
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाकर-किया सर्व कल्याण॥
४-गुरु भक्ति में लीन थे ऐसे-महिमा तिन की गाऊँ मैं कैसे।
ऐसे प्यारे सत्गुरु को हम-झुक झुक कर करें प्रणाम॥

~❧~ ❧ भजन-२९ ❧ ~❧~

तर्जः:-मेरी छम छम बाजे पायलिया....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश जी आए हैं-आज चहुं दिश आनन्द छाए हैं।

१-रक्षा बंधन के दिन गुरु जग में आए-चक नगरी की महिमा हम कैसे गाएं।

आसूदाराम पिता जुगल बाई माता-स्वामी टेऊराम गुरु पाए हैं॥

२-जबी माता निकली मां घबरा गई-कैसे जीवन कटेगा मिले मंजिल नई।

कई व्रत किये, जैसे सुख से जिये-हरचूराम के द्वार पे आए हैं॥

३-हरचूराम साहिब से जब विनती करी-भविष्य वाणी करी तब भाव भरी।

बड़ा संत बने गुण कौन गिने-यह तो जग को राह दिखाए हैं॥

४-विद्या पढ़ने को जब पंजाब गए-ज्ञानी जी बहुत प्रभावित हुए।

गुरु महिमा बढ़ी, विद्या ऐसी पढ़ी-कई गूढ़ अर्थ समझाये हैं॥

५-गुरु टेऊराम का दर्शन किया-स्वामी सर्वानन्द को प्रसन्न किया।

वो राजी हुए, दे गादी गए-गुरु भक्ति में तन मन भुलाए हैं॥

~❧~ ❧ भजन-३० ❧ ~❧~

तर्जः:-मुंहिंजो गुरू त पीरन जो पीरु आ...

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश दयाल आ।

सदा नंग रखंदो नंगपाल आ, परम सुखकारी आहे, मुंहिंजो सतगुरु...

१-जंहिं प्रेम जो प्यालो पियारियो-जंहिं ततल दिलियुनि खे ठारियो।

सदा सुखकारी आहे-मुंहिंजो सतगुरु...

२-जंहिं मण्डल जो शान वधायो-पंहिंजी कला सां जगुत झुकायो।

कामिल कलाधारी आहे-मुंहिंजो सतगुरु...

३-लख थोड़ा तंहिंजा आहिनि-अजु भी पिया नंगड़ो निभाइनि।

लीला तिन न्यारी आहे-मुंहिंजो सतगुरु...

४-निर्बल जो साईं बल आ-बलु तिनि जो श्याम अटल आ।

भक्त हितकारी आहे-मुंहिंजो सतगुरु...

~❖~ ❧ भजन-३१ ❧ ~❖~

तर्जः-मुंहिंजो दारुं दवा तुंहिंजो दीदारु आ....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सुखन रास आ ।

जंहिंजे दर्शन सां थींदो दुखन नास आ ॥

१-मंगल रूप आहिनि थां मंगल करनि ।

कटे पाप पतितन जा पावन करनि ।

जंहिं कलिमल जी कलना कई साफ आ, स्वामी..

२-विद्या था सेखारिनि ब्रह्मज्ञान जी ।

मिटाए छदिनि ऊंदहि अज्ञान जी ।

दिनो आत्म स्वरूप जो अभ्यास आ, स्वामी....

३-सत्संग करनि था सरस ऐं सरल ।

दियनि प्रेम वारो प्यालो भरियल

जंहिंजे पियण सां थींदो उल्लास आ, स्वामी....

४-हदरम तुंहिंजो दर्शन मां दिल में कयां ।

जपे नाम तुंहिंजो मां पार थियां ।

फक्त मुंहिंजे मन में इहा प्यास आ, स्वामी....

~❖~ ❧ भजन-३२ ❧ ~❖~

तर्जः-आया संत सुजान....

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश, दरस डे मूंखे ।

१-दर्शन तुंहिंजो आ दुखहारी-मेटे छडे थो मन जी मूंझारी ।

हरदम डेई हुल्लास, दरस डे मूंख, सत्गुरु....

२-मूरत तुंहिंजी मंगल कारी-दर्शन सां थी थिये बहारी ।

रहे न दुख जो वास-दरस डे मूंखे, सत्गुरु...

३-वचन अन्हांजा शक्तिअ वारा-जिन खयां तिन भाग भलारा ।

सुखी से बारहां मास-दरस डे मूंखे, सत्गुरु....



- ४-नज़र अब्हांजी नूर इलाही-हरदम सभ सां करे भलाई।
 काटे जम जी फास-दरस डे मूंखे, सतगुरु....
- ५-दीन दयालू दाता आहीं-दया अब्हांजी सभ ते सदाई।
 दया घुरे थो दास-दरस डे मूंखे, सतगुरु.....

~❖~ ❧ भजन-३३ ❧ ~❖~

- तर्जः-संत सचा से परमेश्वर जा.....
- थलु:-स्वामी शांति प्रकाश प्यारो-वाह जी मौज मचाए वियो।
 वाह जी मौज मचाए वियो-सभ खे मस्त बणाए वियो॥
- १-सत्संग जो सरदार स्वामी-सार सची समझाए वियो।
 २-हरदम हरहंध मेला लगाए-पाण में मेल कराए वियो।
 ३-देश विदेश जो सैरु कयाई-साजन सभ खे भाएं वियो।
 ४-एकता जो उपदेश दिनाई-वेरु-विरोध मिटाए वियो।
 ५-शांतीअ जी हो शमा स्वामी-शांती सबुरु सिखाए वियो।
 ६-प्रेम प्रकाश मण्डल जी शाखा--शहर शहर फैलाए वियो।
 ७-अमरापुर खां आयो सतगुरु-अमरापुर में समाए वियो।
 ८-दास दिलीप ते सतगुरु स्वामी-महिर जो हथड़ो घुमाए वियो।

~❖~ ❧ भजन-३४ ❧ ~❖~

- तर्जः-आया-आया थी संत सनेही..
- थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सूंहारो-मुंहिंजो कामिल साईं कुर्ब वारो।
 १-साजन मुंहिंजो सिक वारो-डे सभ खे प्रेम भारो।
 पुछे हाल अंदर जो सारो, स्वामी....
- २-दीन दर्दी दुखवारा-अचनि जेके शरन प्यारा।
 करे तिन जो भागु भलारो, स्वामी.....

३-भरम भोला भजनि भारी-दियनि सिख्या समझवारी।

कनि अंदर सभ जो उजारो, स्वामी.....

४-दियनि सुमती कटनि कुमती-कटे कमती करनि मुक्ती।

कनि पार था भव जल भारो, स्वामी....

~❧~ भजन-३५ ~❧~

तर्जः-जीअं वणई तीअं जप तूं राम.....

थलु:-सतगुरु स्वामी शांति प्रकाश-साजन मुंहिंजो संत सचारो।

१-कोमल चित हो दीन दयालू-चंदन सम शीतल हो सुखालू।

सभ सां जंहिंजो प्रेम हो खास-साजन मुंहिंजो....

२-सरल स्वभाव सभिनि सां प्रीती-न्याज़ी निमाणो निर्मल विरती।

हरदम जंहिं कयो प्रेम प्रकाश-साजन मुंहिंजो....

३-विनयी विवेकी वीरु विज्ञानी-अंतरमुखी ऐं गुणी ज्ञानी।

दूर कयो जंहिं देह अधियास-साजन मुंहिंजो....

४-कण-कण में छिठो कृष्ण कन्हई-सभ जीवन सां करनि भलाई।

ब्रियाईअ जो जंहिं कयो विनाश-साजन मुंहिंजो....

५-संत सच्चो हो गुणनि भण्डारो-शरणागत जो हो रखवारो।

कंहिंखे कीन कयो हो निराश-साजन मुंहिंजो.....

~❧~ भजन-३६ ~❧~

तर्जः-सतगुरु खे थी सारियां.....

थलु:-सतगुरु शांति प्रकाश-सुमति दियो साईं सची।

१-काम बली आ दाढो सतायो-हया शर्म ऐं मर्म विजायो।

कटियो काम कुवास, सुमति दियो...

२-क्रोध आ दाढो शोर मचायो-जीअ मुंहिंजे खे जंहिं त जलायो।

कयो क्रोध खे नास, सुमति दियो....

३-लोभ करे केई पाप कमायमि-पाप करे पंहिंजो पाण विजायम।

पटियो पाप जी पाश, सुमति दियो....

४-मोह मुंझायो मन मुंहिंजे खे-दुखी कयो आ तन मुंहिंजे खे।

मेटे मोह जी फास, सुमति दियो.....

५-अहंता वारी अकड़ ओरांगे-धर्म, कर्म सभ वयो वरांगे।

हटायो होद ऐं हास, सुमति दियो.....

~*~ ❧ भजन-३७ ❧ ~*~

तर्जः-सचो साईं सतराम पर उपकारी.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश सुजानी-मुंहिंजो रहिबर रूप रुहानी।

१-चक नगरीअ में देही धरियाऊँ-सिंधुनगर में मंदरु अदियाऊँ।

प्रेम प्रकाशी झण्डो झुलायऊँ-हुयो निर्मल नूर नूरानी, स्वामी.....

२-प्रेम दया जो सागर सत्गुरु-दीन दयालू हुयड़ो दिलबर।

रूप माधुरी जंहिंजो मनोहर-हुयो लालण लाल लासानी, स्वामी....

३-पाप पाखण्ड जी पाड़ पटियाऊँ-सत् धर्म जी नींव विधाऊँ।

शुभ कर्मनि जी राह दसियाऊँ-हुयो सदा गुणन जी खाणी, स्वामी...

४-प्रेम संदो प्रचार कयाऊँ-बियाईअ जो व्यभिचार कढियाऊँ।

हर हिक खे पिण प्यार दिनाऊँ-हुयो संत सचो सैलानी, स्वामी.....

५-गायुनि जो गोपाल हो स्वामी-न्याणियुन जो नंगपाल हो स्वामी।

निधरि जो आधार हो स्वामी-हुयो साजन सभ सां साणी, स्वामी....

६-दिलीप जो हाणे अर्ज अघायो-चरननि में चित्त मुंहिंजो लगायो।

मोह ममत खां साइँ बचायो-कयो मूँते इहा महिरबानी, स्वामी.....

~❧~ ❧ भजन-३८ ❧ ~❧~

तर्जः-मुरली ओ मुरली, मुरली मोहन जी...OR सिक में ओ सिक में....

थलु:-सत्गुरु ओ सत्गुरु, सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश प्यारा।

हुया संत सचारा-जीअ जा जियारा ॥

१-दिनो प्यार सभ खे पियारे प्रेम प्यालो।

कयो हो सभिनि खे साजन सुखालो।

वियें मौज मचाए, मिटाए मूँझारा, जीअ जा....

२-भञ्जी भेद भ्रांतियूं-दिनो ज्ञान सभखे।

कटियो क्रोध सभ जो-कयो शांत सभ खे।

हुयें संत साजन सभ जा सहारा, जीअ जा.....

३-दानी दिलावर-साजन सब्बाझो।

हुयें दीन दयालू दातार वाह जो।

करें वयें सभिनि जा भागु भलारा, जीअ जा.....

४-करे महिर सभ ते-कयो प्यार सभ सां।

हणी मेला हर हंध-जोड़ी तार हरि सां।

थियें साणी सभ सां-संत सोभारा, जीअ जा.....

~❧~ ❧ भजन-३९ ❧ ~❧~

तर्जः-भैया मेरे राखी के बंधन.....

थलु:-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश महान आ।

साजन संत सुजान आ, सुजान आ ॥

१-सभ सां हले थो प्रीति वधाए-न्याज़ी निमाणो निर्मल आहे।

कंदो सभिनि जो सन्मान आ, सत्गुरु स्वामी.....

२-दानी दाता गुणी ज्ञानी-माण हूंदे आहे निरमानी।

द्वींदो सभिनि खे मान आ, सत्गुरु स्वामी....



- ३-कण-कण में दिसे कृष्ण प्यारो-प्यार करे थो सभ सां भारो ।
 रखंदो सभिनि जो ध्यान आ, सत्गुरु स्वामी.....
- ४-जेको दर ते आयो स्वाली-कीन वयो हितां कदहिं खाली ।
 दाता वदो दयावान आ, सत्गुरु स्वामी.....
- ५-दुखियनि जा दुख दूर करे थो-दिलीप ते भी महिर करे थो ।
 ऊँचो जंहिंजो शान आ, सत्गुरु स्वामी.....

~*~ भजन-४० ~*~

तर्ज:-तेरी राहों में खड़े हैं दिल थामके....

- थलु:- स्वामी शांति प्रकाश महान आ-जंहिं मोहियो सजो त जहान आ ।
 बोले मिठड़ा थो बोल-जीअं मिसरीअ जो घोल,
 बुधाए ज्ञान अनमोल-कढियो भरम ऐं भोल ।
 कयो सभ खे जंहिं मस्तान आ-जंहिं मोहियो....
- १-सत्संग में थो मौज मचाए-रिमझिम राणल रास रचाए ।
 डींदो सुहिणी सजुण समझाण आ-जंहिं मोहियो.....
- २-रहिणी ब्रहिणी आ रसवारी-कहिणी सहिणी आ जसवारी ।
 जंहिंजो दुनिया सज्जीअ में शान आ-जंहिं मोहियो...
- ३-आये वये खे मान दिये थो-नंढे वदे सां पाण मिले थो ।
 जंहिंजो चित हरदम निरमान आ-जंहिं मोहियो....
- ४-शरन पयनि जी सार लहे थो-दोखियुनि जा दुख दूर करे थो ।
 दाता वदो दयावान आ-जंहिं मोहियो.....
- ५-सारी दुनिया जसु थी गाए-सभ सां वयें तूं नीहुं निभाए ।
 दिनो सभखे सुठो सन्मान आ-जंहिं मोहियो..
- ६-दिलीप जो साईं दर्द मिटायो-जन्म मरण जी जेल छदायो ।
 कंदो मुश्किल खे आसान आ-जंहिं मोहियो.....

ॐ ॐ ॐ
~*~ ॐ भजन-४१ ॐ ~*~

तर्जः-ईचक दाना मीचक दाना.....

थलु:- सतगुरु मुंहिंजो दीन दयालू-अंतर्यामी आहे, महिर वसाए।

स्वामी शांति प्रकाश प्यारो-हरहंधि हाज़िर आहे, महिर वसाए।

१-सच्चो सुखधाम आ-दींदो विश्राम आ।

लाहे दुख दोखियुनि जा-पूरण कंदो काम आ।

जेको पुकारे श्रद्धा धारे-तंहिंजो वारो वज्राए, महिर वसाए.

२-हीणनि हमराह आ-बे वाहन जी वाह आ।

दीननि जो दाता साई-दया जो दरियाह आ।

जन्म-जन्म जा दुखड़ा मेटे-सुखड़ा दे थो ठाहे, महिर वसाए...

३-जेको जिते याद करे-साई तंहिंखां कीन परे।

पूरो विश्वास धरे-तंहिंजो कम रास करे।

शरणागत जी सतगुरु साई-हरदम लाज बचाए, महिर वसाए...

ॐ ॐ ॐ
~*~ ॐ भजन-४२ ॐ ~*~

तर्जः-संत सचा से परमेश्वर जा....

थलु:-सतगुरु शांति प्रकाश स्वामी-मोहींदडु मनठारु हुयो ॥

१-सूरत जंहिंजी सोभ्या वारी-सुख दींदडु सुखसारु हुयो ॥

२-दर्शन सां दुख दूर थिया थे-दिव्य जंहिंजो दीदारु हुयो ॥

३-ज्ञानी ज्ञाता ध्यानी ध्याता-रातो राम मंझार हुयो ॥

४-सम संतोषी धीरज धारी-गुणनि संदो भण्डारु हुयो ॥

५-दीन दयालू दानी दिलबर-दीनन जो दातार हुयो ॥

६-सरल सुधीरु सियाणो सुहिणो-साजन सभ जो सारु हुयो ॥

७-वीरु विज्ञानी ब्रह्मज्ञानी-दींदो ब्रह्म विचार हुयो ॥

८-सेवा सुमरन सादगी सत्संग-संतनि जो सरदार हुयो ॥

९-राणो रसीली रहणीअ वारो-अमृत रस जी धार हुयो ॥

१०-मुर्शिदि मुंहिंजो मिठडो मालिक-कंदो सभिन सां प्यारु हुयो ॥

११-दास दिलीप जो दाता दिलबरु-महिर भरियो मनठारु हुयो ॥

~❖~ ❧ भजन-४३ ❧ ~❖~

तर्जः:-सारी सारी रात तेरी याद सताए...

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश जी आए।

चहुदिश आनंद मंगल छाये रे, मंगल छाये, सत्गुरु...

१-वीर विज्ञानी ज्ञानी ज्ञाता-अंतर्मुख रहते हैं राता।

हरदम बैठे नाम ध्याये रे-नाम ध्याये, सत्गुरु...

२-कथनी करनी एक हैं जिसकी-रहनी बहनी नेक हैं जिसकी।

सरस सरल समरूप समाए रे-समरूप समाए, सत्गुरु...

३-सेवा साधन खूब सिखाते-सत्संग अमृत जाम पिलाते।

सर्व जीवों को सुख पहुंचाये रे-सुख पहुंचाये, सत्गुरु....

४-जीवन सारा मधुर है जिसका-प्रेम पिलाना काम है उसका।

दास दिलीप क्या महिमा सुनाये रे-महिमा सुनाये, सत्गुरु...

~❖~ ❧ भजन-४४ ❧ ~❖~

तर्जः:-जरा सामने तो आओ छलिये.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश अवतार हो-हू त कृपा कंदडु करतार हो।

धारे देह आयो सिंध देश में-कयो धर्म संदो प्रचार हो ॥

१-रक्षाबंधन डींहं चक नगरीअ में-जन्म वठी साईं आयो हो।

नर नारियुनि थे खुशियूं मनायूं-आनन्द चहुदिशि छायो हो।

थियो जन्म साण जयकार हो-आयो संत सचो सुखकार हो- धारे देह...

२-बचपन खां ई संतनि संग में-नाम नशे में मस्त रहियो।

घर गृहस्थ जी त्यागे तमन्ना-वेही जंहिं हरिनाम जपियो।

कयो सफल पंहिंजो हर श्वास हो-पातो पूरन पद अविनाश हो, धरे देह...

३-सत्य धर्म जी सिख्या सुणाए-सभ कंहिंजो ते सुधार कयो।

वाट सची सभिनी खे बुधाए-अधमनि जो उद्धार कयो।

दिनो शुभ गुण ऐं वीचार हो-इहो मुहिब मिठो मनठारु हो, धरे देह....

~❧~ ❧ भजन-४५ ❧ ~❧~

तर्जः:-आओ प्यारा श्रद्धा वारा...

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-दियनि था सभ खे ज्ञान अथाह।

१-मूरत मधुर निर्माणी आ-मिठड़ी जंहिंजी ब्राणी आ।

ज्ञान भक्तिअ जी खाणी आ-रोज़ बुधाइनि नई कथा ॥

२-सरल सरस समदृष्टि आ-तारी सारी सृष्टि आ।

कृपा जी कई वृष्टि आ-लाहे छदिनि था सभ जी व्यथा ॥

३-नाम जपाइन था हरदम-दूर करनि था सभ जा ग़म।

रास करनि था सभ जा कम-महिर करनि था सभ जे मथां ॥

४-शरण पयनि खे कीन छदिनि-प्यारु देई तंहिं पंहिंजो कनि।

आदर देई साण गदिनि-देखारिन था प्रेम पथा ॥

~❧~ ❧ भजन-४६ ❧ ~❧~

तर्जः:-जिस दिल में बसा था प्यार तेरा...

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश उदार आहे-गुरुदेव मिठो मनठारु आहे।

१-जेको प्रेम प्यालो प्यारे थो-दुख दर्द हिरदे जा टारे थो।

ऐं लेखो जम जो वारे थो-इहो संत सचो सुखकार आहे ॥

२-जेको विषयनि खां त बचाए थो-सभ दुर्गुण दोष छुटाए थो।

ऐं सत्मार्ग में लगाए थो-इहो कंदो सभिनि जो उद्धार आहे ॥

३-जेको नाम हरीअ जो जपाए थो-सभ पापनि मेल मिटाए थो।

ऐं आवागमन हटाए थो-इहो दया संदो दातार आहे ॥

४-जेको सभ जो अर्ज अघाए थो-मरीजनि जो मर्ज मिटाए थो।

ऐं सभ जो कर्ज कटाए थो-इहो हर कंहिं जो आधार आहे ॥

५-जेको रांवल रंग रचाए थो-मन मोहन साण मिलाए थो।

ऐं सभ जी आश पुजाए थो-इहो कृष्ण जो अवतार आहे ॥

~❧~ ❧ भजन-४७ ❧ ~❧~

तर्जः-मन मोहन गिरधारी बलहारी जावां दर्शन तेरियां.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश आहिन से संत उदारी-संत उदारी पर उपकारी ॥

१-घर घर में जंहिं नाम जपायो-पाप कटिन था भारी ।

२-सुतलनि खे जंहिं वजी जाग्रायो-सिख्या सुणाए सुखकारी ।

३-सत्संग साधन जंहिं त सेखारियो-ज्ञान करनि गुलजारी ।

४-शरन पयनि खे कीन छदियाऊँ-पार कयाऊँ भव भारी ।

५-दास दिलीप जो अर्ज इहो ई-रखजो शरण मंझारी ।

~❧~ ❧ भजन-४८ ❧ ~❧~

तर्जः-जब तुम्हीं चले परदेश....

थलु:-स्वामी सत्गुरु शांति प्रकाश सुखन जी रास, हुआ उपकारी ।

जंहिं तारी सृष्टि सारी....

१-जेको ज्ञानी वढो गुणवान हुयो-साईं माण हूंदे निर्माण हुयो ।

जंहिंमें निवड़त न्याज निहठाई सरलता भारी, जंहिं तारी....

२-जंहिं देश विदेश जो सैरु कयो-देई नाम मिठो दुख दूर कयो ।

चाढ़े नाम नौका ते तारिया नर ऐं नारी-जंहिं तारी...

३-जंहिंमें भक्ति ज्ञान अपार हुयो-ऐं नंढे वढे सां प्यार हुयो ।

हुयो विश्व वंदनीय संत सचो सुखकारी, जंहिं तारी....

४-साईं दीनन जो त दयाल हुयो-जंहिंजो हिरदो वढो विशाल हुयो ।

जेको दया संदो दरियाहु दया जंहिं धारी, जंहिं तारी...

~❧~ ❧ भजन-४९ ❧ ~❧~

तर्जः:-डाढी सतगुरु जी सिक आहे.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सोभारो-आहे विश्व सजे जो प्यारो।

१-जंहिंजी मूरत मधुर निमाणी-मिठड़ी आ निर्मल वाणी।

आहे प्रेमियुनि जो त सहारो॥

२-जंहिंजी निवड़त न्याज़ निशानी-आहे मुंह में संदनि पेशानी।

जंहिंजो हिरदो विशाल उदारो॥

३-साईं दाता दानी आहे-सभनी जी आश पुजाए।

जंहिंजो भरियल आहे भण्डारो॥

४-जंहिं मण्डल जो शान वधायो-घर-घर में नाम जपायो।

कयो सभ जो अंदर उजारो॥

५-केढी महिमा साईंअ जी आहे-सजो जगत पियो थो गाए।

जस जंहिंजो आहे भारो॥

~❧~ ❧ भजन-५० ❧ ~❧~

तर्जः:-ऐ मेरे दिल ए नादां.....

थलु:-मेरे सतगुरु शांति प्रकाश-देते आनंद परम हुलास।

तेरा रूप मधुर महाराज-मन मेरे करो निवास॥

१-तेरी अमृत रसधारा, हर लेती दुख सारा।

सुख के तुम सागर हो, सुख देते हो भारा।

करते मंगल बि का, मुद मंगलमय हो खास॥

२-दुखियों के दर्दों को, तुम दूर भगाते हो।

पतितों को पीड़ा से तुम मुक्त कराते हो।

जो शरन पड़े तेरी, दुख हो गये उसके नाश॥



३-कलि पावन अवतारी, तुम भक्तन भयहारी।

तेरे करुणामय कृपा, भवपार करे भारी।

हे नाथ कृपा कर दो, रहे तव चरनन की आश ॥

४-भव भय भंजन-हारी, तुम सत्गुरु सुखकारी।

शरणागत की गुरुवर, करते हो रखवारी।

अब शरन पड़े तेरी, सब कारज करिये रास ॥

~❖~ ❧ भजन-५१ ❧ ~❖~

तर्जः-हम गीत सनातन गाएंगे.....

थलुः-मेरे सत्गुरु शांति प्रकाश सदा-सब जीवन के हितकारी हैं।

सब जीवन के हितकारी है-वो तो मूरत मंगलकारी हैं ॥

१-नाम तुम्हारा है सुखकारी-सभ जीवों की विपदा टारी।

ताप क्लेश मिटाकर सबके-देते आनंद भारी हैं ॥

२-सत्य मार्ग के शिक्षक बनकर-शरणागत के रक्षक बनकर।

दीन जनों के संरक्षक बन-सब की करे रखवारी हैं ॥

३-देश-विदेश में नाम जपाया-कर्म-योग का पाठ पढ़ाया।

सेवा सुमरन सत्संग द्वारा-करते बाग बहारी है ॥

४-भक्त जनों के भार हटाते-भार हटाकर पार लगाते।

पार लगाकर सार बताते-दिलीप जाये बलिहारी है ॥

तर्जः-दिल के अरमां आसुंओं में बह गये....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश सुखन जी रास आ।

जंहिंजे दर्शन सां दुखन जो नाश आ ॥

१-केई जनमनि खां हुयस भ्रमनि भुलयल।

भ्रम भोलन जो कटियो जंहिं फास आ ॥

२-मोह ममत जे जाल में जकिड़ियल हुयुस।

ज्ञान खंजर सां कपियो जंहिं पाश आ ॥

३-दोष दुर्गुण जे हुयुस गप में गतल।

सतमार्ग में जंहिं करायो पास आ ॥

४-पाप जी पीड़ा में मां पिसजी पियुस।

मूं पतित जो जंहिं कयो त विकास आ ॥

५-विषयनि रूपी विहु में मां वकिड़ियल हुयुस।

विषय जे विष जो कयो त हास आ ॥

६-भवसागर जी भीड़ में भुलिजी वियुस।

मूं भुलियल खे जंहिं करायो भास आ ॥

७-काम जे कुण्डे मूंखे हो किनो कयो।

मूं किने खे जंहिं कयो त सुवास आ ॥

८-क्रोध जी कारी ऊँदहि अंधो कयो।

मूं अंधे खे जंहिं दिनो प्रकाश आ ॥

९-लोभवारी लहर में लुढ़िजी वियुस।

लहर मां मूंखे बचायो खासु आ ॥

१०-अहंता वारे ऐब में अटकी पियुस।

ऐबन खे काटे कयो जंहिं क्यास आ ॥

११-शरण पंहिंजीअ में मूंखे रखियो सदा।

शरणागत जी आखिरी अरदास आ ॥

ॐ भजन-५३ ॐ

तर्जः:-गम खाईदें सुख पाईदें.....

थलु:-सुखकारी है दुखहारी है-सतगुरु शांति प्रकाश जी।

मेरे सतगुरु शांति प्रकाश जी ॥

- १-माधुर्य मंगलरूप है-मंगलकारी है, अघहारी है-सतगुरु.....
- २-पीड़ा पतितों की हरे-पीड़ाहारी हैं, पावनकारी है, सतगुरु....
- ३-दीनों की दयनीय दशा-जिहं सुधारी है, दयाधारी है, सतगुरु....
- ४-चित्त की चिंता चूर कर-दें बहारी हैं, गुलिजारी हैं, सतगुरु...
- ५-भक्तों की भयता हरे-भयहारी हैं, अभयकारी हैं, सतगुरु....
- ६-करुणामय कृपा सदा-रखते जारी हैं, अवतारी हैं, सतगुरु...

ॐ भजन-५४ ॐ

तर्जः:-सतगुरु जो दीदार कर मन.....

थलु:-सतगुरु शांति प्रकाश मुंहिंजा, सतगुरु शांति प्रकाश।

देह धरे अजु आयो जगु में, सभिन सुखन जी राश ॥

- १-चक नगरीअ जो भागु भलारो-जिते पधारियो सतगुरु प्यारो।
गगन मण्डल में जय-जय थी वई गूंजियो सजो आकाश ॥
- २-जीजल जुगल जी कोख सहाई-आसूदेमल खे दियनि वाधाई।
बाल गोपाल बुढा नर नारियूं-कनि पिया मंगल हुलास ॥
- ३-नण्डपणि खां ई नाम जपियाऊँ-संग साधन जो खूब कयाऊँ।
कृपा वारी कणी पाताऊँ-थियड़ो ज्ञान विकास ॥
- ४-सतगुरु टेऊँराम स्वामी-गुरु मिली वयो अंतर्यामी।
सेव कमाए खूब रिझाये-पातो पद् अविनाश ॥
- ५-सतगुरु सर्वानन्द संहारो-नीहुं निभायो तंहिं सां सारो।
श्रद्धा धारे कयाऊँ जुहारे-कृपा थी वई खास ॥

- ६-सत्गुरु जीआ गादी वसाई-सत्संग सुन्दर मौज मचाई।
मौज मचाए मेला मल्हाये-हरदम दिनो उल्लास॥
- ७-शरणागत खे कीन छदियाऊँ-नाम देई तंहिं पार कयाऊँ।
भवजल भारी चाढ़े-चाढ़ी-काटी जम जी फास॥

~❖~❖❖ भजन-५५ ~❖~❖❖

तर्जः-अमां रहिजी कीअं ईदो.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश महान।

धरतीअ ते धरे अवतार, आयो पाण कृष्ण भगवान॥

१-ईहो आहे श्याम सुन्दर, करे लीला मन मोहे,
वसियो सभिनी जे अंदर, स्वामी शांति प्रकाश....

२-सुहिणी सत्गुरु जी सूरत, दिली दिल खे अचे आनन्द,
मन मोहींदड़ मूरत, स्वामी शांति प्रकाश....

३-आहे गायुन जो गोपाल-ग्यारस जो व्रत धरे,
नंग पाले थो नंगपाल-स्वामी शांति प्रकाश...

४-साई दीन दयालू आ-लहे सार सभिनि जी थो,
प्रेमियुनि प्रतिपालू आ, स्वामी शांति प्रकाश....

५-लख थोरा मां भायां-नाहे ताकत का राजू,
गुण गाए छा गायां-स्वामी शांति प्रकाश....

~❖~❖❖ भजन-५६ ~❖~❖❖

तर्जः-सौ बार जन्म लेंगे.....

थलुः-स्वामी शांति प्रकाश बाबा-तोखे दिलड़ी थी याद करे।

सारियां सिक मां सत्गुरु-अखियुनि में आबु भरे॥

१-हुएं सत्गुरु तूं मनठारु-दिनो दिल जो सचपच प्यारु।

साई तोखां सिवाय ब्रियो को-नाहे अहिड़ो को दिलदार।

नाहे तो जहिड़ो आधार-कीअं मन ही धीरु धरे॥

तर्जः-याद आ रही है, तेरी याद आ रह है....

थलुः-मुंहिंजो सतगुरु आहे आयो-मुंहिंजो बाबल आहे आयो।

सतगुरु शांति प्रकाश अचण सां-आनन्द आहे छायो ॥

१-सखर ज़िले चक गोठ में-जनम वठी आहे आयो।

सावण राखी पूनम-उणवीह सौ सत में जायो।

माता जुगल आसूदेमल जे घर में आहे आयो ॥

मुंहिंजो सतगुरु....

२-नंढपण खां ई वृत्ति-जंहिंजी नाम में हुई समाई।

सतगुरु जी कृपा सां-आहे कामिल कई कमाई।

मस्त थियो हरको बाबल ते-पंहिंजो चाहे परायो ॥

मुंहिंजो सतगुरु....

३-उल्लास नगर में सुहिणो-सतगुरु जो मंदरु बणायो।

मिली संतनि ऐं प्रेमिनि सां-हर साल मेलो मल्हायो।

हरको दर तां खाई वजे-ना खाली कंहिंखे मोटायो ॥

मुंहिंजो सतगुरु....

४-जो आयो श्रद्धा धारे-हिन बाबल जे त द्वारे।

नाम दुई थो सतगुरु तंहिंजा-कुलई कार्ज संवारे।

हरीअ बुलीअ भी हिन दर ते आ-पंहिंजो सीस निवायो ॥

मुंहिंजो सतगुरु...

ॐ भजन-५९ ॐ

तर्जः-कोई रंगील सपनों में आके.....

थलु:-कैम्प पंजे जा संत प्यारा-मोहिणी मूरत मधुर निमाणा ।

जेको अचे तंहिंजा कनि जयकारा-वाह वाह स्वामी शांति प्रकाश ॥

१-ज्ञान गुणन जी खाणी आ-मान हूंदे निर्मानी आ ।

रखी विश्वास जेको अचे थो-तंहिंजुं बाबल झोलियूं भरे थो ।

दुखियनि जा दुख दूर करे थो-वाह वाह स्वामी....

२-जेठ महिने में वर्सी लगाइनि-सत्गुरु टेऊराम जो जसु गाइनि ।

भारत भर जा प्रेमी अचनि था-पाये छेरियूं भगत नचनि था ।

मीहं महिर जा सभ ते वसनि था-वाह वाह स्वामी....

३-नाहिरी महिने में मेलो मचे-वाह जो रंग थो खूब रचे ।

केई साधू संत सच्चारा-बोलिनि वाणी अमृत धारा ।

जेको अचे तंहिंजा भरिनि भण्डारा-वाह वाह स्वामी...

४-हरी बलीअ ते दया कजो-सदा शरन पंहिंजी रखिजो ।

सारी संगत थी हथड़ा जोड़े-कुमति किनीअ खे कढिजो कोरे ।

बाझ कजो मूँते हथ घोरे-वाह वाह स्वामी.....

ॐ भजन-६० ॐ

तर्जः-मेरा रंग दे बसंती चोला....

थलु:-हीउ सत्गुरु टेऊराम आ-हीउ सत्गुरु, हीउ सत्गुरु टेऊराम आ ।

हीउ सत्गुरु टेऊराम आ....२

१-जो बि आयो दर ते स्वाली, थींदो मालामाल आ ।

आशाऊँ सब पूरियूं करे थो, वाह जो हिन जो कमाल आ ।

सिक श्रद्धा रखी जो बि अचे थो तंहिंजो पूरन काम ॥

हीउ सत्गुरु.....

२-सत्गुरु टेऊराम जी जोती, सर्वानन्द में समाई हुई।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द बि, वाह जो मौज मचाई हुई।

देश-विदेश में नाम जपायो-साखी ऐं सत्नाम ॥

हीउ सत्गुरु....

३-स्वामी सर्वानन्द जी शक्ति-शांति प्रकाश में आई आ।

सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश बि, वाह जी कई कमाई आ।

संगत विच में ईएं सूंहनि पिया, गोपियुनि में घनश्याम ॥

हीउ सत्गुरु.....

४-स्वामी शांति प्रकाश आसीसा-देव प्रकाश ते आहे कई।

साणी रहिणी साणी कहिणी-साणी आहे सेवा कई।

सत्गुरु जो जस शल वधाए-सदा जपाए नाम ॥

हीउ सत्गुरु....

५-आहे आस अंदर में हिकड़ी-सत्गुरु शाल पुज्जाईदो।

महिर करे हिन दास गरीब जा-दुखड़ा दर्द निवारींदो।

हरि-बलीअ जो स्वाल इहो आ-सेवा कयूं निष्काम ॥

हीउ सत्गुरु.....

६-हर छंछर हर चोथ ते सत्गुरु-दर जो पलउ पाराईदो।

सत्गुरु साई महिर करे तंहिंजा-कुलई कारज बणाईदो।

हरि बलीअ जो अर्ज इहो आ-जपियूं सदा तुंहिंजो नाम ॥

हीउ सत्गुरु.....

~*~ ॐ भजन-६१ ॐ ~*~

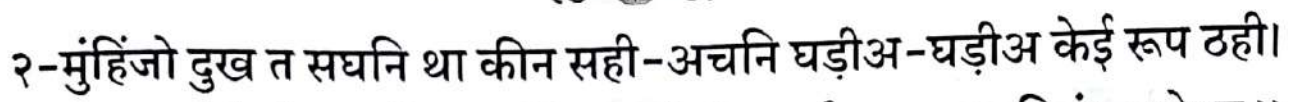
तर्जः-स्वामी सर्वानन्द फकीरु अथव.....

थलुः-मुंहिंजो शांति प्रकाश गुरु पूरो आ-जंहिं भारु खंयो त समूरो आ ॥

१-वाह-वाह में पियो वक्त टपे-दुख क्लेश में ना मनड़ो तपे।

पेई रसना तुंहिंजो नाम जपे-कर्या याद त हाज़रां हज़ूरो आ ॥

~*~ ॐ 36 ॐ ~*~



२-मुंहिंजो दुख त सघनि था कीन सही-अचनि घड़ीअ-घड़ीअ केई रूप ठही।

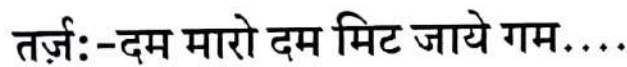
कदहिं अंदर ब्राहिर कदहिं घर पहुंची-कर्या याद त ज़ाहिरां ज़हूरोआ ॥

३-रहां ब्रनल अब्हांजे भाणे ते-हथ रखजो बाबा निमाणे ते।

कयो दया दृष्टि अणज्जाणे ते-गुरुदेव जो अहिड़ो शहूरो आ ॥

४-हथ जोड़े थो अर्दास कर्या-तव्हांजे चरन कमल जी आस कर्या।

तब्हांजे दर्शन जी मन में प्यास कर्या-मुंहिंजो सतगुरु अहिड़ो सूरु आ ॥



तर्जः-दम मारो दम मिट जाये गम....

थलु:-मनायो खुशियूं जन्म दिन जूं-धन धन आ, स्वामी शांति प्रकाश ॥

१-ज्ञानिनि में आहे ज्ञानी-सूरत आ जंहिंजी निमाणी ।

दुनिया जा प्रेमी अचनि था-बुधण संतनि जी वाणी ॥

२-वाह जो आ मंदरु साईंअ जो-जुण सुख पुरीअ जो निज्जारो ।

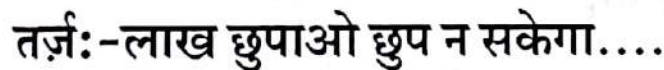
जेको अचे थो खाए-पंहिंजो हुजे चाहे धारियो ॥

३-अजु था जन्मदिन मनायूं-घर घर में वरियूं वाधायूं।

झूमनि था हिरदा सभेई-सीरा मालपुड़ा खाऊँ ॥

४-हरि ब्रलीअ जा सत्गुरु स्वामी-आहीं तूं अंतर्यामी ।

कष्ट कुलई तूं कटजां-अंग संग थीजां साणी ॥



तर्जः-लाख छुपाओ छुप न सकेगा....

थलु:-महिमा स्वामी शांति प्रकाश जी-केर सधंदो ग्राए।

सच पुछो अवतार साईं - भगवान कृष्ण जो आहे॥

१-सूरत जंहिंजी लासानी आ-मन खे मस्त बणाए।

वचननि जी वरुा करे-सार्ई अमृत सब खे पियाए।

धर्म सनातन वेद शास्त्र जी-वाणी नित थो बुधाए ॥

२-राम जियां मर्यादा जंहिमें-कृष्ण जियां कर्मयोगी ।
वेदनि में विद्वान आ साईं-योगिनि में आ योगी ।
भुलियल भिटिकियल बेवाहनि जी-रोशन राह बणाए ॥

३-हिन दर ते श्रद्धा सां जेको-अचे थो सीस निवाए ।
बिगड़ियल भाग बणाए पंहिंजो-मन वांछित फल पाए ।
दास तारो चवे गाल्हि इन्हीअ में-कोई शक ना आहे ॥

~*~ ❧ भजन-६४ ❧ ~*~

तर्जः-बार बार तोहे क्या समझाऊँ...

थलुः-सत्गुरु तोखे अर्ज कर्यां थो-बुधु तूं मुंहिंजी पुकार ।
शांति प्रकाश बाबा-बेड़ो तूं पार उतार ॥

१-पंजनि वेरियुनि आहे वरायो-तंहिंखां मूंखे बचायो ।
हथड़ा डेई मूंखे हिम्मथ जा-बाबल पार लगायो ।
ऐब त मूं में आहिनि इलाही-नाहे जिन जो शुमार ॥

२-द्रोपदीअ जी लाज बचाई-जिअं कृष्ण अवतार ।
नंगड़ो मुंहिंजो नंगी ढकीदें-बाबा बख्शणहार ।
जहिड़ो आहियां तहिड़ो तुंहिंजो-रक्षा कजइं हरवार ॥

३-सालन खां मां स्वाली आहियां-दर्शन पंहिंजो पसाई ।
दर्शन हाणे डे बाबल यां-पाण वटि मूंखे घुराई ।
हरि बली भी दर तुंहिंजे जा-आहिनि नंढड़ा बार ॥

- तर्जः:-होठों से छूलो तुम.....OR ऐ मेरे दिल ए नादां...
- थलु:-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-मूंखे तुंहिंजो सहारो आ ।
 दुनिया में तोखां सवाइ-कोई ब्रियो न पनारो आ ॥
- १-हिक महिर तुंहिंजी घुरिजे-जीअं नाम जपींदो रहां ।
 कयां दुखियनि जी शेवा-तुंहिंजा गीत बि गाईंदो रहां ।
 आहीं सब कुछ तूं मुंहिंजो-कयो तो छो किनारो आ ॥
- २-दुनिया जी गरिदिश में-मां डाढो मुंझियलि आहियां ।
 हिक प्रीती तुंहिंजी खपे-दिल में मां इहो चाहियां ।
 हरदम बाबल मूंखे-तुंहिंजो आधारो आ ॥
- ३-आहे अर्ज इहो मुंहिंजो-हिति हुति तूं राखो थिजांइ ।
 जीअं हलींदीअ पंहिंजी हलां-मोथाजी न कंहिंजी दिजां ।
 हरि-बलीअ जे लाइ तूं ई-साई कृष्ण कारो आं ॥

- तर्जः:-स्वामी टेऊराम महाराज, कयो साध....
- थलु:-मुंहिंजा सतगुरु शांति प्रकाश-कयो महिर असां ते खास ॥
- १-हिक मोह ममत कटिजो-सदा नाम जो दान दिजो ।
 दिजो संतनि मांहिं निवास-मुंहिंजा....
- २-ब्रियो सतगुरु दिजो सुमती-कढो कुबुध्या ऐं कुमती ।
 दियो आत्म जो प्रकाश-मुंहिंजा.....
- ३-टियों दान इहो चाहियां-गुण गोबिंद जा गायं ।
 कयो पूरन मन जी आस-मुंहिंजा....
- ४-हरि-बली पुकारे थो-बुधी हथड़ा बाढाए थो ।
 कजो अंत समय में पास-मुंहिंजा....

तर्जः-भेनरु मुंहिंजो प्रेम लगो....

थलु:-जन्मदिन सत्गुरु जो-गुरु शांति प्रकाश जो।

जेके सिक सां मनाईदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

१-सत्गुरु जी सूरत सुठी-लगी मुंहिंजे मन खे मिठी।

तंहिंखे दिल में विहारींदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

२-सत्नाम साखी जपियो-जय श्री कृष्ण चओ।

प्रेम रखी जे पुकारींदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

३-सत्संग में आनन्द अचे-मस्तीअ में हरको नचे।

पल-पल जे राम ध्याईदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

४-गांधीनगर मौज मचे-संगति ठाहे टोलियूं अचे।

लटूं पेड़ा जे खाईदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

५-हरि-बली साईं मूं पातो-सचो सत्गुरु सुजातो।

सभई सत्गुरु संभालींदा-भागु पंहिंजो बणाईदा ॥

तर्जः-छोड़ बाबुल का घर....

थलु:-बाबा गरीबनिवाज़, कजो पूरन काज-गुरु शांति प्रकाश।

१-मुंहिंजो बाबल जंहींते थो महिर करे-तंहिंजा हिक ई पल में भण्डार भरे।

जेको रखे विश्वास-तंहिंजी पुजाए थो आस-गुरु शांति प्रकाश...

२-जहिड़ो मां तहिड़ो दास तुंहिंजो आहियां-निमाणा-नेण खणी थो तोढ़े निहारियां।

रखो शरम मंझार-कटियो कष्ट करतार-गुरु शांति प्रकाश....

३-ऐबन सां भरियल ऐबदार आहियां-बुधी बाहूं बुई तोखे थो बाढायां।

करि रहिम मूँते-करि बाझ मूँते-गुरु शांति प्रकाश....

४-बाबल तूं आहीं रहिमत जो धणी-तो में आ करामत सभिनि खां घणी।

कम रास कजो-मूंखे पास कजो-गुरू शांति प्रकाश....

५-करे दास बलि थो इहाई आज़ी-बुधी हथड़ा बेई हरि करे थो न्याज़ी।

शल रहिजी अचे-मौज मन में मचे-गुरू शांति प्रकाश....

~*~ ❧ भजन-६९ ❧ ~*~

तर्जः-मिलती है जिंदगी में मुहब्बत कभी-कभी....

थलुः-साईं शांति प्रकाश सतगुरु-दर्वेश दुलारा।

गांधीनगर में आइया-प्रभूअ जा प्यारा ॥

१-राहूं जिन जूं निहारियमि-सालनि खां थे संभारियमि।

अजु मुंहिंजे घर से आया-साहिब सचारा ॥

२-श्री स्वामी टेऊराम जी-गादीअ जा सरदार।

सखावत जा आहिनि से धणी-हिंद-सिंध में हाकारा ॥

३-स्वामी शांति प्रकाश नालो-मिसरीअ खां बी मिठो।

नज़रुनु सां था निहाल कनि था-प्रानन जा प्यारा ॥

४-संगति जा आहिनि स्वामी-हीणनि जा थी हामी।

हरि बलीअ जे आहिनि सदा-जीअ जा जियारा ॥

~*~ ❧ भजन-७० ❧ ~*~

तर्जः-सैयां दिल के बड़े ही कठोर निकले

थलुः-मूंखे सतगुरु जी सदा तार आहे,

स्वामी शांति प्रकाश जी तंवार आहे।

१-स्वामी शांतीअ जो अवतार हुयो-ऐं दीननि लाइ दातार हुयो।

जंहिंखे बार-बुढनि लाइ प्यार आहे-मूंखे तंहिं बिन कीन करार आहे ॥

२-मूं त शहर ऐं रस्ता गोलहया सभई-पर कान मूंखे आ खबर पई।

जली आहे विछोड़े में जान वई-तंहिंजी याद मूंखे हरवार आहे ॥

३-स्वामी अयोध्या वारो राम आहे-ऐं गोकुल जो घनश्याम आहे।

ऐं सभिनी लाइ सुखधाम आहे-जंहिंजो नालो कृष्ण करतार आहे ॥

~❧~ ❧ भजन-७१ ❧ ~❧~

तर्जःदिल दिया है जां भी देंगे.....

थलुः-अजु जन्म दिन था मनायूं स्वामी शांति प्रकाश जो।

अचो खुशीअ जो गीत गायूं-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

१-सुन्दरु सांवण जो महीनो-राखी बंधन पूनम रात।

सुख दियण लाइ आयो साजन-आहे कृष्ण जी सौगात।

सभ करे दीदार खुश थिया-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

२-नन्दपणि खां ई जंहिंजो नातो-संतनि सां आहे बणियो।

रहिणी-कहिणी ऐं सहिणीअ सां-साजन सभ खे आ वणियो।

सारी दुनिया जसु थी गाए-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

३-संतनि में सिरमोर साजन-संगति जो बणियो श्रृंगार।

ऐब कंहिंजा कीन दिसनि था-सभिनि सां कनि प्रेम-प्यार।

जगु में जय-जयकार आहे-स्वामी शांति प्रकाश जो ॥

४-हरि-बुलीअ ते आहे कृपा-अहिडे सतगुरु देव जी।

रहिजी अचे शल तोड़ ताई-सदा कयूं तंहिं सेव ही।

संगति भी थी प्यार चाहे-स्वामी शांति प्रकाश जो।

~❧~ ❧ भजन-७२ ❧ ~❧~

तर्जः-महिफल में जल उठी शमा.....

थलुः-डींहुं सभागो अजु आ सरतियूं-सभई हली दीदार कयो।

स्वामी शांति प्रकाश आ जन्मियो-सभई निमी नमस्कार कयो।

१-गुलन-फुलन जा हार गले में-मस्तक तिलक लगायो हली।

चरन धोई चरनामृत पाए-मुख सां गीत बि गायो हली।

धूप दुखाए आरती उतारे-सभई मिली जयकार कयो ॥

२-प्रेम सां जंहिं अजु पूजियो सतगुरु-तन-मन-धन सब भेट धरे।

भव सागर जे लहर-लोढ़न खां सतगुरु तंहिं झट पार करे।

धन-धन भागु उन्हनि जा भेनरु-जिन सतगुरु सां प्यार कयो ॥

३-सत्गुरु जहिड़ो सज्जन न ब्रियो को-लोक टिन्हीं-टिन्हीं कालनि में।
महिमा मुख सां कहिड़ी चवे प्रभू-पढ़ी दिसो त पुराणनि में।
कथन करण जी ताकत नाहे-सत्गुरु जो उपकार कयो ॥

~*~ ❧ भजन-७३ ❧ ~*~

तर्जःदिल के अरमां आसुओं में बह गए.....
थलु:-आश आ सभ जे अंदर में आश आ।
जीअ जियारो स्वामी शांति प्रकाश आ ॥
१-साधु ब्रह्माण जो करे सन्मान जो।
रूप अतिथीअ में दिसे भगवान जो।
दीन दुखियनि ते कंदो सो क्यास आ ॥
२-प्यार डेई सभ खे जो पंहिंजो करे।
सभ मथां थो महिर जो हथड़ो धरे।
जंहिंजे हृदे में हरीअ जो वास आ ॥
३-गायुनि जो राखो अथव गोपाल ही।
बुढनि-बेवाहनि जो आ रखपाल ही।
जो कटींदो ज्ञान सां जम फास आ ॥

~*~ ❧ भजन-७४ ❧ ~*~

तर्जः-चांदी की दीवार न तोड़ी.....
थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सचपच-कृष्ण जो अवतार हो।
कृष्ण वांगुरु रास रचाई-मुहिबु मिठो मनठार हो ॥
१-मोहन वारी मुरली वजाए-सभखे मस्त बणाए छदियो।
मिठड़ा-मिठड़ा बोल बुधाए-प्रेम जो मण्डल मचाए छदियो।
मेला लगाए रास रचाए-वाह जो रंगड़ो रचाए छदियो।
जाणी-जाणणहार सत्गुरु-मुहिबु मिठो मनठार हो ॥

२-वृन्दावन में गोपिनि सां जीअं-कृष्ण रास रचायो हो।

सागी लीला करण लाइ सत्गुरु-पाण प्रगटु थी आयो हो।

प्रेम जो प्यालो पियारे सभिनि खे-जयश्री कृष्ण जपायो हो।

दिल जो ठारण हारो सत्गुरु-शांतीअ जो भण्डार हो॥

३-कहिड़ा-कहिड़ा गुण मां ग्रायां-स्वामी शांति प्रकाश जा।

ब्रह्म जा ज्ञाता परम सुजाता-सुख दींदड़ सुख रास जा।

अहिड़ो सुहिणो सत्गुरु पाए-भाग खुलिया हरिदास जा।

त्यागी विष्णुनि खां वैरागी-दिल घुरियो दिलदार हो॥

~❖~❖~❖ भजन-७५ ~❖~❖~❖

तर्जः-कोसा कोहर खणी हलियो...

थलुः-सत्गुरु शांति प्रकाश जहिड़ो-मन विरलो को थींदो।

अहिड़ो प्रेम जो सागर को-ब्रियो ईंदो ना ईंदो॥

१-हो नूरानी नूर ही-चमकंदड़ पेशानी ही।

सूरत सुहानी ही -जो सभ खे सुख दींदो॥

२-छा मौज मचाइनि था-सुधि-बुधि विसराइनि था।

हू त ब्रह्म लभाइनि था-सदा मुखड़ो रहे टिड़ंदो॥

३-गम दूर भजाइनि था-रोअंदनि खे खिलाइनि था।

सभ अर्ज अघाइनि था-कोई खाली न वेंदो॥

४-अर्दास अघाईदा-दम देरि न लाहींदा।

प्रताप खे बख्शींदा-तदहिं जनम सफल थींदो॥

तर्जः-परदेसी परदेसी जाना नहीं.....

थलु:-सत्गुरू ओ सत्गुरू-स्वामी शांति प्रकाश,
स्वामी शांति प्रकाश-आयुसि तो दरि, रखी दिल में आश।
तूं रहिमत जो आं दाता-ओ मुंहिंजा साईं,
करे महिर मालिक-मुंहिंजी पूरी करि तूं आश ॥

१-दखार छिठी मूं तुंहिंजी-सत्गुरू आली आ।

तूं दीन दुनिया जो मालिकु-तूं ई वाली आ।

केई आश रखी दरि आया-आहिनि स्वाली आ।

स्वालिन जी भरिजां झोली-जेका खाली आ।

दे सुमती अहिड़ी दाता-ओ मुंहिंजा साईं।

ब्रियो तोखां कीन घुरां मां-करि कुमति किनीअ खे नासु।

सत्गुरू ओ सत्गुरू.....

२-केई पांदु पसारे-तो दरि आया थई।

कनि मिंथ छिहाड़ी तोखे-पल्लव पाराया थई।

अड़ियनि जा भी दाता-अर्ज ओनाया थई।

निपुटनि खे देई पुटिड़ा-झूला झुलाया थई।

केई सिक सां तोखे पुकारिनि-ओ मुंहिंजा साईं।

करि आशूं सभ जूं पूरियूं-वजे नीगंर भी न निरासु।

सत्गुरू ओ सत्गुरू....

तर्जः-असुर जो राम रीझाड़ बंदा.....

थलुः-मंगलमय मुंहिंजो सत्गुरु आहे-मंगलमय दीदार आ।

मंगल दींहं आ जन्मु गुरु जो-मंगल सां मुंहिंजो प्यार आ॥

१-स्वामी शांति प्रकाश सोभारो-मंगल करण लाड़ आयो आ।

कष्ट विघ्न सभु दूर करे थो-कंदो लायो सजायो आ॥

२-मंगल दींहं पंज रोट पचाए-गुरूअ दरि जो ईंदो आ।

मन जा मनोरथ पाए सोई-हरको खुश थी वेंदो आ॥

३-मंगल वारो मनठार प्यारो-सत्गुरु देव भगवान आ।

बालकी रतना सीसु निवाए-महिमा जंहिंजी महान आ॥

तर्जः-तू चीज़ बड़ी है मस्त-मस्त.....

थलुः-साईं शांति प्रकाश जी मस्त-मस्त।

तेरा नाम बड़ा है मस्त-मस्त।

तेरे नाम में हो गया मस्त-मस्त।

नहीं मुझको कोई होश-होश।

मैंने लीनी तेरी ओट-ओट।

मैं हूं तेरा....मैं हूं तेरा साईं भक्त-भक्त।

तेरी बंसी पे हो गया मस्त-मस्त॥

तेरे द्वार पे हूं मैं मस्त-मस्त॥

१-ये मन तेरी भक्ति में डूबा-हर पल तेरा मैं नाम जपूंगा।

मैं तो हूं तेरा दास-दास-मुझको है तेरी आस-आस।

तू दिल का.....तूं दिल का है चित चोर-चोर,

सब आए हैं तेरी ओर-ओर.....

२-द्वार तेरे पे साईं जो भी आया-तेरी माया को समझ न पाया।

तू भरता उसकी झोली-झोली-मीठी है तेरी बोली-बोली।
साईं तुझको...साईं तुझको याद किया जिसने,

मन उसका हो गया मस्त-मस्त...

३-दीन दुखी का साईं तू है दाता-झलक दिखादो मन है मेरा प्यासा।

तू दुनिया भर में एक-एक-तेरे काम बड़े हैं नेक-नेक।
महिमा तेरी सोनी...महिमा तेरी सोनी गाता रहे,

तेरी नाम में होकर मस्त-मस्त...

~*~ ❧ भजन-७९ ❧ ~*~

तर्जः-द्राढो मिठो आ-द्राढो मिठो आ.....

थलुः-द्राढो मिठो आ-द्राढो मिठो आ,

स्वामी शांति प्रकाश जो नालो द्राढो मिठो आ।

द्राढो प्यारो आ द्राढो प्यारो आ,

स्वामी शांति प्रकाश जो नालो द्राढो प्यारो आ॥

१-गुरुअ जे दरि हली भागु था खुलनि-वाह वाह जो भागु था खुलनि।

पूरब जनम जा पाप धोपजनि-वाह वाह पाप धोपजनि।

कर्मनि जी रेखा टरी सिधी थी वजे-

चवनि वेद पुराण कोई मजे न मजे।

भागु पंहिंजो ठाहे वटु कष्ट मिटाए वटु।

वक्तु तुंहिंजे लाइ आयो आ-आयो आ....

२-करि कुछ पुत्र सुख चाहिं जे-सुख चाहिं जे।

पाप कंदें हिते दुख पाईदें हुते-दुख पाईदें हुते।

गुरुअ जे शरण में ईदें तूं हली-

साईं शांति प्रकाश कंदो तुंहिंजी सवली।

प्रेम लगाए दिसु-नातो निभाए दिसु।

साईंअ महिर जो मीहड़ो वसायो आ-वसायो आ....



३-गुरू गरीबनिवाज़ आहे कंदो सवली-वाह जी कंदो सवली।
 चवे साईं सत्संग में आउ तूं हली-वाह वाह आउ तूं हली।
 गुरूअ जो दरु सदा खुलियलि आहे-
 गुरूअ जे दर खे वरु मिलियलि आहे।
 सिरडो झुकाए दिसु सुख फल पाए दिसु-
 संगति जो साईं अजु आयो आ-आयो आ...

~*~ ❧ भजन-८० ❧ ~*~

तर्ज:-होठों से छू लो तुम....

थलु:-मुंहिंजा सत्गुरु शांति प्रकाश-पंहिंजी गोद में जाइ दिजांइ।
 मां त पकड़ियो पल्लव तुंहिंजो-मुंहिंजी लाज अची रखिजांइ॥
 १-मां आहियां ऐब भरी-मुंहिंजा दोह न तूं दिसजांइ।
 जे भुलियलु आहियां बाबा-सची राह अची दसिजांइ।
 पंज दूत मुंहिंजे मन जा-अची सत्गुरु तूं कढिजांइ॥
 २-मुंहिंजो करम-धरम दाता-आहे सत्गुरु तो हथ में।
 तूं जेकी करीं सत्गुरु-करे सघीं थो सेकण्ड में।
 बसि ब्री न अथमि आशा-भवसागर पार कजांइ॥
 ३-तूं मात पिता मुंहिंजो-मां बारु आहियां तुंहिंजो।
 रहे तार तुंहिंजी तन में-जपियां नामु सदा तुंहिंजो।
 मिली मुहिब रहां तोसां-तूं महिर करे मिलजांइ॥

~*~ ❧ भजन-८१ ❧ ~*~

तर्जः-तुझे सूरज कहूं या चंदा.....

थलु:-तोखे राम चवां रखवारो-तोखे कृष्ण चवां मां कारो ।

आहे संतनि में सोभारो-साईं शांति प्रकाश प्यारो ॥

१-तुंहिंजी सुहिणी सुहिणी सूरत-तुंहिंजी मोहिणी-मोहिणी मूरत ।

जगु तारण जे लाइ आयो-मुंहिंजो मोहन प्यारो-प्यारो ।

माता जुगल बाईअ जो दुलारो-पिता आसूदाराम जो जियारो ।

सारे जगु खां आहे नियारो-साईं शांति....

२-आहे दर्द भरी हीअ दुनिया-कोई संगी नाहे कंहिंजो ।

करे कार्ज संगति जा साईं-ऐं करेथो सभखे पंहिंजो ।

चण्ड तारनि खां भी सुहिणो-आहे हरदम प्यारो-प्यारो ।

सारे जगु जो आहे सहारो-साईं शांति.....

३-आहे नील गगन जो तारो-आकाश मण्डल में सितारो ।

आहे तारनि में हिकु तारो-साईं शांति प्रकाश संहारो ।

ध्रुव तारे ज्यां हीउ तारो-इहो हरदम न्यारो-न्यारो ।

हरिदास जे अखि जो तारो-साईं शांति...

~*~ ❧ भजन-८२ ❧ ~*~

तर्जः-सायो नारा-सायो नारा कल फिर आऊंगी सायो नारा...

थलु:-गुरु प्यारा सतगुरु प्यारा-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा ।

हरि प्रेमियुनि खे दिल जे अंदर-आहे तुंहिंजी प्यास प्यारा ॥

१-तुंहिंजे गुणनि जो गान करियूं-पल-पल तुंहिंजो ध्यान धरियूं ।

याद आहीं सभिनी खे सदा-जोगी उल्हास नगर वारा ॥

२-वचननि सां मन मोहे छदियो-धारियनि खे भी पंहिंजो कयो ।

तुंहिंजो जसु मिली गायूं था-संत सचा साईं संहारा ॥

३-दर्द वंदन ते आणे दया-सेवा जा केई कार्य कया।

साधू ब्रह्मण संतनि लाइ-खोले छदिया तो भण्डारा॥

४-तोसां प्रीत अचे रहिजी-मुरलीअ जी आ इहा अर्जी।

हरदम पंहिंजी बाझ करे-बाझ करियो ओ बाझारा॥

~*~ भजन-८३ ~*~

तर्ज:-चोरी-चोरी चुपके-चुपके अखियां मिलाई रे.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश जा लख थोरा भायां मां,

सेवक तिन जो हरदम सदायां मां।

१-देई प्यार मूंखे जिन पंहिंजो बणायो।

समझ देई मूंखे वेही समझायो।

चुमी चरण तिन जा भाग ही बणायो मां॥

२-भरे प्रेम पियालो जंहिं सभखे पियारियो।

देई बोधु आतम जो अंदरि दीयो बारियो।

भुलिजी भी तिनखे कीन भुलायो मां॥

३-अचे शल रहिजी मुंहिंजी आश ईहा आहे।

दास तुंहिंजो साई प्यास ईहा आहे।

सत्नाम साक्षी जपियां ऐं जपायो मां॥

~*~ भजन-८४ ~*~

तर्ज:-पंखीड़ा ओ पंखीड़ा....

थलु:-ओट आ तुंहिंजी मूंखे तुंहिंजो आधार आ।

स्वामी शांति प्रकाश मुंहिंजो तोसां प्यार आ॥

१-तुंहिंजा प्रेमी तोखे अजु पुकारिनि पिया।

तुंहिंजे दर्शन लाइ वाटूं निहारिनि पिया।

कदहिं अची दर्शन दीदें इन्तजार आ-स्वामी....



२-पंहिंजे मेले मां मूंखे बि वसाइजांइ ।

कदहिं दर्शन लाइ दिलडी न तरसाइजांइ ।

दर्शन सां तुंहिंजे थींदी मुंहिंजी दिल बहार आ-स्वामी....

३-भव सागर में तुंहिंजो सहारो खपे ।

हिन बेड़ीअ खे साईं किनारो खपे ।

वीरभान तोखां सवाइ बेकार आ-स्वामी....

~❖~ ❖ भजन-८५ ❖ ~❖~

तर्जः-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा.....

थलुः-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा-पखीअड़ा ओ पखीअड़ा ।

पखीअड़ा तूं वजु उदामी, मुंहिंजे साईंअ डे-

खणी वजु नियापो स्वामी शांति प्रकाश डे ॥

१-तोखे हीरनि ऐं मोतियुनि जो सुहिणो हार मां डींदसि ।

पंहिंजे सत्गुरु लाइ हिक गाल्ह चवंदसि ।

चरन चुमी अर्ज कजांइ सुन्दर श्याम खे-खणी वजु...

२-खणी नेण पई निहारियां कदहिं ईदें तूं पिरिं ।

इन्तज़ार में न वजनि मुंहिंजा प्राण निकरी ।

मिठड़ा छो थो तड़फाई अची दर्शन जल्द डे-खणी...

३-खणी न्यापो ईदें नारायण तोखे इनाम डींदोसांइ ।

मिठो वात कराए शंकर तोखे दुआ कंदोसांइ ।

ईदें सूमर डींहूं या आरतवार या छंछर वार ते-खणी...

~❧~ ❧ भजन-८६ ❧ ~❧~

तर्जः-दूलह दरियाह शाह मुंहिंजी.....

थलु:-सतगुरु शांति प्रकाश मूंखे दर्शन पंहिंजो कराइजांइ ।

दास पंहिंजे ते हथड़ो झुमाए पंहिंजो सदाई बणाइजांइ ॥

१-दर्शन तुंहिंजे लाइ सिकां थो-घड़ीअ-घड़ीअ सब कंहिंखां पुछां थो ।

दर्शन दे हिक वार तूं बाबा-मनड़ो मुंहिंजो ठरिजांइ ॥

२-जनम-जनम जो नातो तोसां-आउ अची मिल सतगुरु मूंसां ।

दर पंहिंजे जो सेवक बणाए-महिर जो हथड़ो घुमाइजांइ ॥

३-जो भी तुंहिंजी शरण में आयो-भागु फिटलु तो तिन जो बणायो ।

मूंते पंहिंजी कृपा धारे-चरणनि में त विहारिजांइ ॥

~❧~ ❧ भजन-८७ ❧ ~❧~

तर्जः-परदेसियों से ना अखियां मिलाना.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश जी महिमा आ न्यारी ।

याद करे थी अजु भी दुनिया सारी ॥

१-प्रेम जो सागर सभ खे प्रेम पियाए-

सभिनी दिलियुनि खे वियो पंहिंजो बणाए ।

प्रेम जी मिठड़ी बोली लगे सभ खे प्यारी ॥

२-देश विदेश में नाम जपाए-

पंहिंजे गुरूअ जो शान वधाए ।

धनगुरू टेऊराम जी धुनी उच्चारी ॥

३-धर्मशाला, नारीशाल बुढा आश्रम खोले-

दवाखाना खोले, सुहिणी गऊशाला खोले ।

जोगीअ वसाई सुहिणी हीअ फुलवाड़ी ॥

४-सिजु चण्डु तारा जेसीं हवा रहे पाणी-

साईअ जी रहंदी तेसीं अमर कहाणी ।

सैरु सचो सैलानी वयो सुहिणी करे तैयारी ॥

५-ज्ञानी सचो गुणधाम सचो हो-

परम उदारी निष्काम सचो हो।

ब्रह्मानन्द संत सचो हो नित अवतारी॥

~*~ ❧ भजन-८८ ❧ ~*~

तर्ज:-है प्रीत जहां की रीति सदा.....

थलु:-आहे संत महान स्वामी शांति प्रकाश-

मां तंहिंजा ई गुण ग्रायां थो।

गुण घणा हुआ मुंहिंजे सत्गुरु में-

मां हिकु-हिकु करे बुधायां थो-हो.....

१-जंहिंमें राम जहिड़ी मर्यादा हुई-साईं सभ खे राह देखारे वियो।

करे दीननि दुखियनि जी सेवा-साईं प्रेम जो प्यालो प्यारे वियो।

अहिड़े पर उपकारी संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो॥

२-श्री कृष्ण वांगुरु रास रचाए-प्रेम जी बंसी वजाए वियो।

गायुनि बछड़नि जी सार लही-गऊशाला जो निर्माण कयो।

अहिड़े ज्ञानी-ध्यानी संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो॥

३-साईं शंकर वांगुरु ध्यान धरे-ज्ञान जो दीप जगाए वियो।

साईं जीव ईश जो भेद हटाए-संसा भरम मिटाए वियो।

अहिड़े त्यागी जोगी संत खे मां-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो॥

४-हुई हनुमान ज्यां भक्ती जंहिंमें-सरस्वतीअ जी वाणी हुई।

सभिनी संतनि ऐं ग्रंथनि जी-सत्संग में भी समझाणी हुई।

ब्रह्मानन्द अहिड़े सत्गुरु खे-अजु नित-नित शीशु झुकायां थो॥

~ ❧ ~ भजन-८९ ~ ❧ ~

तर्जः-मुंहिंजो गुरू त पीरनि जो पीरु आ.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश महान आ-असां प्रेमियुनि लाइ भगवान आ।
हलो त हली दर्शन कर्युं-गुरूअ दर ते-गुरूअ दर ते...

१-जेको शांतिअ जो भण्डार आ, जंहिंजी महिमा अपरम्पार आ।

हलो त हली महिर घुरूं.....

२-जेको प्रेम संदो सागर आ, सचपच नटवर नागर आ।

हलो त हली प्रेम पियूं....

३-साईं सभ जी आश पुजाए, साईं दुखड़ा सभ जा मिटाए।

हलो त हली झोली झलियूं...

४-सचो ज्ञान संदो भण्डार आ, साईं कलियुग में अवतार आ।

हलो त हली दया घुरूं.....

५-जंहिंजी निर्मल मिठड़ी वाणी, जंहिंमें वेदनि जी समझाणी।

हलो त हली भरम भजूं....

६-ब्रह्मानन्द मां सीसु झुकायां, गुण कहिड़ा-कहिड़ा गायां।

हलो त आसीस घुरूं.....

~ ❧ ~ भजन-९० ~ ❧ ~

तर्जः-जिंदगी इक सफर है सुहाना.....

थलु:-अची गदिजी खुशियूं मनायूं-स्वामी शांति प्रकाश साईं आयो।

जय-जय शांति प्रकाश बाबा-जय-जय शांति प्रकाश।

धन गुरु टेऊराम-सभई चओ धन गुरु टेऊराम॥

१-प्रेम जो सागर प्रेम भरे-सभिनि खे दिए थो महिर करे।

अचो झोली अची के भरायो-स्वामी शांति प्रकाश....



२-संतनि में सोभारो आहे-सभिनी संतनि में न्यारो आहे।

अचो गदिजी शीश झुकायो-स्वामी शांति प्रकाश....

३-त्यागु सचो वैरागु मन में-भगिती (सेवा) कयाऊँ बचपन में।

करे शेवा सचो भागु ठाहियो-स्वामी शांति प्रकाश....

४-निर्धन खे थो धन दिए साईं-निपुटनि खे दिए लाल साईं।

अचो दुखड़ा दर्द मिटायो-स्वामी शांति प्रकाश....

५-ज्ञान जो दीपक जगायो आ-अज्ञान अंधेरो मिटायो आ।

अचो भरम ऐं संसा मिटायो-स्वामी शांति प्रकाश....

६-ब्रह्मानन्द थो अर्जु करे-संगति ते सत्गुरु महिर करे।

थींदो पल्लव सभनि जो सजायो-स्वामी शांति प्रकाश....

~❁~ ❁ भजन-९१ ❁ ~❁~

तर्जः-ज्योति से ज्योति जगाते चलो.....

थलुः-साईं शांति प्रकाश जी शरण हलो-भागु तव्हांजो त थींदो भलो।

१-साईं शांति प्रकाश जी सुहिणी सूरत-सिज चण्ड खे शर्माए।

दर्शन सां दुख दूर थियनि था-वचन मन खे लुभाए।

सचे गुरूअ जे दर ते हलो-भागु....

२-साधू योगी ब्रह्माज्ञानी-तुंहिंजो जसु था गाइनि।

हर हृदे में प्यार भरियो तो-अमृत रस वरसाइनि।

आरती गुरूअ जी उतारींदा हलो-भागु.....

३-धन-धन दीहं सभागो आयो-गुरूअ जो दर्शन पायो।

प्रेम प्रकाशी सत्य धर्म जो-घर-घर संदेशो पहुंचायो।

सत्नाम साक्षी जपाईंदा हलो-भागु....

४-जगति बिखारी तुंहिंजे दर ते-जगु खे पालण हार।

राणी दुखी थी तोखे पुकारे-सत्गुरु सुणजो पुकार।

मन जो माण मिटाईंदा हलो-भागु.....

~*~ ❧ भजन-९२ ❧ ~*~

तर्जः:-मुंहिंजी भेनरु भली फार पई आ...

थलु:-भेनरु महिला मंदरु त सींगारियो-साईं शांति प्रकाश पधारियो।

१-आयो भगवान कयो सन्मान-सत्गुरु सचे जा आहिनि अहिसान।

जंहिं नाम जो प्यालो पियारियो-साईं...

२-वर्यूं वाधायूं वज्रियूं शहिनायूं-गुरुन अचण जूं खुशियूं मनायूं।

जंहिं मनडो सभ जो ठारियो-साईं...

३-आसण लगाए सत्गुरु विहारियां-फूलनि जी मालहा मां तंहिंखे पहिरायां।

अचो आरती गुरुन जी उतारियूं-साईं....

४-हुयूं आसूं से पुजियूं प्यासूं-मन अंदर जे बासियूं बासियूं।

राणी सत्गुरु आ कारज संवारियो-साईं...

~*~ ❧ भजन-९३ ❧ ~*~

तर्जः:-लेके पहला पहला प्यार....

थलु:-जेको शरण अचे हिकवार-काटे चौरासीअ जो भारु।

सत्गुरु शांति प्रकाश-आहे मोहन मनठार ॥

१-शांति प्रकाश जहिडो सज्जणु न कोई-शरण अचे संसार सज्जोई।

दे थो सभ खे ब्रह्मज्ञान-महिमा जंहिंजी आहे महान ॥

२-शांति प्रकाश जी मूरत धारियो-शरण पयनि जा कारज संवारियो।

करे नजर सां निहाल-करे सभ खे मालामाल ॥

३-वचननि जी हित गंगा वहे थी-रोज अचण सां ज्ञाण पवे थी।

रखिजो राणीअ मथां राज-दिनो सुखनि जो साज ॥

~*~ ❁ भजन-९४ ❁ ~*~

तर्जः-मुंहिंजी भेनरु भली फार पई आ.....

थलु:-चक शहर में आनन्द छायो-माता जुगल खे शांति प्रकाश जायो।

१-सत्गुरु जुमण सां वर्युं वाधायूं-

खुश थिया नंढा वडा मर्द मायूं।

थी वियो सभ जो लाजो सजायो-माता.....

२-सावण महिनो पूरणमासी-

आयो शांति प्रकाश घट-घट वासी।

अची आरती गुरुन जी उतार्यो-माता....

३-चक शहर में थिया शादनामा-

पिता आसूदे घर आया नानी-नाना।

पोड़ थाल पताशा विरहायो-माता....

४-जन्मदिन सत्गुरु जो मल्हायो-

प्रेमी गद्विजी खुशियूं मनायो।

कंदा सभ जो शल भागु सवायो-माता....

५-ब्रारु रतना करे अरदास-

हे मुंहिंजा सत्गुरु शांति प्रकाश।

हर मेले ते भेरो करायो-माता....

~*~ ❁ भजन-९५ ❁ ~*~

तर्जः-अजु भेनरु भली फार पई आ.....

थलु:-आया आया खुशियुनि जा ओ दींहड़ा-

वसिया महिर मुहब्बत जा मींहड़ा॥

१-आयो सत्गुरु भगवान कयां सन्मान-

संगति गद्विजी कयो प्रणाम।

आया जगु तारण लाइ जोगीअड़ा-वसिया...

२-शांति प्रकाश पधारियो रस्ता सींगारियो-

हिरदे जे हिंदोरे में साईं विहारियो।

हाणे लालण पाता ओ लीअड़ा-वसिया....

३-गांधीनगर में थिया शादमाना-

प्रेमी वज्राइनि धुकड़ दमामा।

आया अमरापुर जा सूंहारा-वसिया.....

४-पूरियूं पकोड़ा ऐं दहीवड़ा-

संत विरहायो लदूं पेड़ा।

आहिनि राणीअ जा त पिरिंअड़ा-वसिया...

~*~ ॐ भजन-९६ ॐ ~*~

तर्जः-जिस दिल में बसा था प्यार तेरा...

थलु:-मूंते सत्गुरु कयो उपकार जेको-

सचे नाम जो मूंखे दान दिनो ॥

१-मूंसां सत्गुरु कयड़ी भलाई आ-मुंहिंजी कीन दिठी का दिंगाई आ।

जंहिं बिगड़ी सभ जी बणाई आ-आहे दीन दयालू दातार वदो ॥

२-साईं शांति प्रकाश जहिड़ी केरु करे-पंहिंजी नूरी सभ ते नज़र करे।

जेको बार-बुढे खे पंहिंजो करे-पर गुरु चरननि में रहे भिनो ॥

३-मुंहिंजो गुरू गरीबनिवाज़ आहे-सदा रखंदो लाज आहे।

कंदो कीन कंहिंजो मोहताज आहे-बार रतना खूब आजमाए दिठो ॥

~*~ ॐ भजन-९७ ॐ ~*~

तर्जः-मुंहिंजो दारूं दवा तुंहिंजो दीदारु आ....

थलु:-मूंखे सत्गुरु सचा तुंहिंजो आधार आ।

हिति जीअण कलजुग में बेकार आ ॥

१-साईं शांति प्रकाश पूरो सत्गुरु मिल्यो।

मुंहिंजे पूरब जनम जो को भागु खुल्यो।

हाणे मिल्यो गुरुन जो मिठड़ो प्यार आ ॥

२-स्वामी सर्वानन्द सचपच शंकर जो रूप हो ।
शांति प्रकाश स्वामी शांति स्वरूप हो ।
गोहर, गंभीरु ज्ञानी कयाई को न गमु ॥

३-स्वामी देव प्रकाश सागियो नूरानी नूर थी ।
सजे संसार में ही ज़ाहिरां ज़हूर थी ।
बरकत भरियल थी हिन जो हिक हिक कदमु ॥

४-प्रेम प्रकाश मंदर में आई संगति हीअ समूरी ।
कंदो परम योगी आश सभिनी जी पूरी ।
बणी रहमान मोहन ते कंदो शल रहम ॥

~*~ ❧ भजन-१०० ❧ ~*~

तर्जः-परदेसी-परदेसी जाना नहीं...

थलुः-रहिम मूँते रहिम मूँते रहिम कयो-२, रहिम जो घरु आं...२
आ गुरुदेव प्यारा-संगति जा सहारा ।
संगति जा सहारा-साई चक शहर वारा ॥

१-सावण महिनो पूरणमासीआई आ-२
माता जुगल जी झोल थीयड़ी साई आ-२
पिता आसूदे सब खे दिनी वाधाई आ-२

प्रेमियुनि जी बि साईअ आश पुजाई आ-२, आ गुरुदेव...

२-कलियुग में अवतार बणिजी आयो आ आयो आ ।
संतनि में सिरमोर बणिजी आयो आ आयो आ ।
गायुनि जो गोपाल बणिजी आयो आ आयो आ ।

गोपियुनि जो घनश्याम बणिजी आयो आ आयो आ-आ गुरुदेव...

३-कल्याण जे पंजे नंबर में स्थान कयो स्थान कयो ।
प्रेमियुनि जे पूरब जनम जो भाग खुलियो भागु खुलियो ।
साई शांति प्रकाश सत्गुरु मिली वियो-मिली वियो ।

दीननि जो दातार राणी मिली वियो-मिली वियो-आ गुरुदेव...

~❧~ ❧ भजन-१०१ ❧ ~❧~

- तर्जः:-सद्गुरु टेऊराम तेरी मैंने देखी महान शक्ति.....
थलु:-सद्गुरु शांति प्रकाश तुझको-भूल न पाएगा ये जमाना ।
१-माता पिता जियों सभको सम्भाला-दीना प्यार अपारा ।
सबके हित का कारज कीना-मेटा तांका दूख महाना ॥
२-लोक सेवा का पाठ पढ़ाया-तन पर दूख सहारा ।
सबके मन को प्रसन्न कीना-सबमें ईश्वर को तुम जाना ॥
३-वेद शास्त्र इतिहास पुराना-पाके ज्ञान भण्डारा ।
तांकी सबको शिक्षा दीनी-कीया ना कबहूँ अभिमाना ॥
४-अजब अजायब निष्ठा तेरी-सबमें ब्रह्म पछाना ।
हंसते हंसते बोध कराया-ऐसा तेरा ज्ञान विज्ञाना ॥
५-कर्म उपासन ज्ञान भण्डारा-पूरण सत्गुरु मेरा ।
जो जिसका सत्पात्र होया-दीना उसको सोई दाना ॥
६-सरल नम्रता शांति स्वरूपा-सम दम षट् गुणधारी ।
राजू तिनके क्या गुन गाऊँ-सत्गुरु पूरण गुणनि निधाना ॥

~❧~ ❧ भजन-१०२ ❧ ~❧~

- तर्जः:-रेशमी सलवार कुर्ता जाली का....
थलु:-स्वामी शांति प्रकाश कृष्ण मुरारी हो ।
कर्म उपासना ज्ञान जो भण्डारी हो ॥
१-सत्संग जी रास रचाई-ऐं प्रेम जी मुरली वजाई ।
मिड़ी आया मड़द ऐं माई-तिन तन जी सुधि विसराई ।
अजब लीलाधारी हो.....
२-गीता जो ज्ञान बुधायो-निज करम धरम में लगायो ।
भरमनि जो भूत भजायो-आतम जो बोध करायो ।
ब्रह्म विचारी हो...

३-गायुनि जो हो रखपालू-हुयो गरीबनि जो कृपालू।
हुयो सत्गुरु दीन दयालू-ऐं प्रेमिनि जो प्रतिपालू।
पर उपकारी हो...

४-राजू छा महिमा गायं-मां सेवक तिन जो आहियां।
चरननि में सीसु झुकायां-ऐं सदा ईएं थो भायां।
गुरु अवतारी हों...

~*~ ॐ भजन-१०३ ॐ ~*~

तर्जः-संसार है इक नदिया.....
थलु:-गुरुदेव मेरे प्यारे-मुझको अपना लीजे।
स्वामी शांति प्रकाश महाराज-चरणों में जगह दीजे ॥
१-तेरी पावन चरणारज-मस्तक को लगाऊँ मैं।
तन मन से करूँ सेवा-भवपार हो जाऊँ मैं।
मन मोड़ दो विषयों से-तेरे नाम में मन भीजे ॥
२-दुनिया के द्वदों में-कहां सुरती न खो जाए।
बस इतनी कृपा करना-तेरे नाम से जुड़ जाए।
रहूँ शरण सदा तेरी-दुख जन्म मरण छीजे ॥

~*~ ॐ भजन-१०४ ॐ ~*~

तर्जः-ऐ मेरे दिल-ए नादां ...
थलु:-सुनो अर्ज मेरा गुरुवर-तेरा पावन प्यार मिले।
स्वामी शांति प्रकाश महाराज-तेरा आधार मिले।
१-मैंने तो सुना जब से-तुम प्रेम के सागर हो।
जो शरण आए तेरी-भर देते गागर हो।
मेरा जीवन है खाली-मुझे ज्ञान अपार मिले ॥
२-सब छोड़के दुनिया को-मैं शरण पड़ा तेरी।
करदो कृपा मुझ पर-बन जाऊँ तव चेरी।
हर क्षण मुझको तेरा-पावन दीदार मिले ॥

~*~ ❧ भजन-१०५ ❧ ~*~

तर्जः:-जिया बेकरार है.....

थलु:-ज्ञानी गुणवान आ-दाता दयावान आ।

स्वामी शांति प्रकाश मुंहिंजो-संत सचो महान आ ॥

१-सत्संग ऐं सेवा सां जंहिंजो-पूरो प्रेम-प्यार आ।

हरदम हरहंधि मौज मचाए-कंदो बाग बहार आ ॥

२-मिठड़ी जंहिंजी बाणी आहे-अमृत रस बरसाए थो।

ताप कलेशी दोखी दर्दी-सभ जो दर्द हटाए थो ॥

३-देश विदेश जो सैरु करे साईं-सभ खे सुख पहुंचाए थो।

प्रेम संदो प्रचार करे ऐं-प्यालो प्रेम पिलाए थो ॥

४-कर्मयोगी आ सत्गुरु मुंहिंजो-शुभ कर्मनि मग लाए थो।

भेद भरम ऐं भ्रांति तोड़े-ज्ञान जो दीप जलाए थो ॥

५-शरणागत जी सत्गुरु हरदम-रखंदो सार सम्भार आ।

ज्ञान डेई अज्ञान मिटाए-भव खां कंदो पार आ ॥

~*~ ❧ भजन-१०६ ❧ ~*~

तर्जः:-मां स्वाली तो दर आहियां.....

थलु:-स्वाली थी आयो आहियां-

ओ सत्गुरु शांति प्रकाश-हीउ अर्जु अघायो मुंहिंजो।

१-हिक भगति दियो भाव वारी-जा प्रभूअ खे आ प्यारी।

जेका पार करे भव भारी-मां भगति उहा थो चाहियां ॥

२-ब्रियों प्रेम दियो दिल वारो-राजी कर्या प्रभू प्यारो।

वजी जगु खां कयां किनारो-मां प्रेम उहो थो चाहियां ॥

३-टियों दियो विश्वास जी मूड़ी-जीअं प्रभू मिले जरूरी।

ब्री दुनिया भायां कूड़ी-विश्वास उहो थो चाहियां ॥

४-इहो अर्जु अघायो मुंहिंजो-मां बणियो रहां शल तुंहिंजो।

नितु नाम जपायो पंहिंजो-बसि प्यार इहो थो चाहियां ॥

~ ❁ ❁ ❁ ~
~ ❁ ❁ ❁ ~
❁ भजन-१०७ ❁

तर्जः-ए मेरे दिल कहीं दूर चल.....

- थलु:-स्वामी शांति प्रकाश सुजान हो-जेको ज्ञानी वढो गुणवान हो ॥
१-हीउ संत संचो त सुधीरु हो-नित निहठो निमाणो गंभीरु हो ।
ऐं वीरु वढो विद्वान हो ॥
२-सचो सत्संग जो सरदार हो-कंदो ज्ञान संदी गुफ्तार हो ।
ऐं कामिल वढो कलावान हो ॥
३-जंहिंजो मिठिड़ो मधुर आवाज़ हो-जंहिंजी ब्राणीअ अंदरि को राज़ हो ।
ऐं बोधी वढो बलवान हो ॥
४-कयो त्यागु पंहिंजो आराम हो-बणियो संत सचो निष्काम हो ।
ऐं दाता वढो दयावान हो ॥
५-ठाहियो आश्रम सुठो आलीशान हो-अची झुकियो सज्जो त जहान हो ।
ऐं आकिलि वढो अकलवान हो ॥
६-केई गुणनि संदो भण्डार हो-पंहिंजे प्रेमिनि जो आधार हो ।
ऐं नेही वढो निगहबान हो ॥

~ ❁ ❁ ❁ ~
~ ❁ ❁ ❁ ~
❁ भजन-१०८ ❁

तर्जः-ओ-४ मुझे किसी से प्यार हो गया.....

थलु:-ओ ओ ओ स्वामी शांति प्रकाश महान हो ।

- १-आयो देही धरे दर्वेश हो-दिनो सत्मार्ग संदेश हो ।
करे महिर मया, दीननि ते दया-सभु कारिज कया ॥
२-जेको दानी वढो दातार हो-लहंदो सभ जी सार संभार हो ।
मिठो बोले करे, दिल खोले करे-वियो झोल भरे ॥
३-खोली नारिनि लाइ नारी शाला-ऐं यात्रिनि लाइ धर्मशाला ।
शुभ कर्म कया, दूर गम कया-सभ आनन्द थिया ॥
५-खोलियो दोखिनि लाए दवाखानो-दिनो पसुनि पखिनि खे हो दाणो ।
सभमें मोहन दिठो, दिनो प्यार मिठो-हुयो संत सुठो ॥

~*~ ❧ भजन-१०९ ❧ ~*~

तर्जः-अर्जु अघाड़ अर्जु अघाड़...

थलु:-ढे दीदारु, ढे दीदार-ढे दीदार स्वामी शांति प्रकाश ।

१-मधुर अब्हांजी मूरत आहे-दर्शन सां सभु दुखड़ा लाहे ।

करे बहार-३....स्वामी शांति प्रकाश ॥

२-नाम अब्हांजो निर्मल न्यारो-परम तेज सां भरियलि सारो ।

सर्व आधार-३....स्वामी शांति प्रकाश ॥

३-लीला आहे अब्हांजी निराली-दिसी दिसी दिल थिये सुखाली ।

आहे सुखकार-३...स्वामी शांति प्रकाश ॥

४-आतम घर जा आहियो वासी-दिलड़ी दर्शन लाड़ आ प्यासी ।

अचु हिकवार-३...स्वामी शांति प्रकाश ॥

५-दास दिलीप जो अर्जु ओनायो-दरसु ढेई दिल मुंहिंजी ठारियो ।

हींएं जा हार-३ स्वामी शांति प्रकाश ॥

~*~ ❧ भजन-११० ❧ ~*~

तर्जः-दिल को मिलाओ तुम दीन दयाल से....

थलु:-संत सचारो स्वामी शांति प्रकाश हो ।

१-सुहिणी हो सूरत वारो-मुहिणी हो मूरत वारो ।

दया दातारो स्वामी-शांति प्रकाश हो ॥

२-मिठड़ी हुई बाणी जंहिंजी-सुहिणी समझाणी जंहिंजी ।

ज्ञानी गुलज़ारो स्वामी-शांति प्रकाश हो ॥

३-शंकर ज्यां ध्यानी दाता-राम ज्यां ज्ञानी ज्ञाता ।

कृष्ण अवतारो स्वामी-शांति प्रकाश हो ॥

४-दुनिया खां करे किनारो-पातो हो प्रभू प्यारो ।

भक्तिअ भण्डारो स्वामी-शांति प्रकाश हो ॥

५-कृपा जो हुयो द्वारो-सभिनी जो कयो उद्धारो ।

दिलीप आधारो स्वामी-शांति प्रकाश हो ॥

~❖~ ❧ भजन-१११ ❧ ~❖~

तर्जः-होठों से छू लो तुम.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश महाराज-शरणागत मैं तेरी।

करदो कृपा गुरुवर-अरदास येही मेरी ॥

१-कई जन्मों से भटक रहा-नाना योनी अंदर।

भोगे बहु दुख भारे-खाये चौरासी चक्कर।

काटो फंद मेरा यह-मिट जाए जम फेरी ॥

२-जीवन यह मेरा रहा-विषयों के विष से भरा।

आशा की पाशा में-मैं निशदिन लटक रहा।

करो मुक्त मुझे इन से-हो जाऊँ तब चेरी ॥

३-किये पाप घने मैंने-पतितों में हूँ नामी।

तुम पतित पावन गुरुवर-सत्गुरु हो सुखधामी।

करो पार मुझे भव से-ना नाथ करो देरी ॥

~❖~ ❧ भजन-११२ ❧ ~❖~

तर्जः-तुम दिल की तमन्ना हो.....

थलु:-सारी दुनिया के स्वामी हो-तुम अन्तर्यामी हो।

शांति प्रकाश जी-तुम कृष्ण मुरारी हो ॥

१-छोड़के मैं सारा जहां-दर पे तेरे आया हूँ।

सत्गुरु मेरे विनती सुनो-चरणों में तेरे आया हूँ।

बिठा ले अपनी शरण में-कि दास तुम्हारा हूँ-शांति प्रकाश...

२-मन में लगी है लगन तेरी-दर्शन चाहूँ शाम सबेरे।

छोड़ूंगा ना दर को तेरे-आस पुजा दो मन की मेरे।

सुना दो अपनी बंसी को-मेरे दिल की तमन्ना है-शांति प्रकाश..

३-उल्हासनगर अमरापुर धाम-शांति प्रकाश जी संत महान।

दीन दुखी को देते दान-करते वो सबका कल्याण।

सोनी दर तेरे आता रहे-तेरी महिमा गाता रहे-शांति प्रकाश....

~❖~ ❧ भजन-११३ ❧ ~❖~

तर्जः:-महेंदी लगाके रखना, डोली सजाके सखना...
थलु:-झोली फैलाए रखना-मन में बसाए रखना।
इक दिन तो आके साईं-पूरा करेंगे सपना-झोली...
१-आया हूं तेरे द्वारे-मन की मुरादे पाने-
भटका हुआ है ये मन-किस्मत को तू जगादे।
मैं दास हूं इक तेरा-जग के हो तुम विधाता-
चरणों में आया तेरे-बिगड़ी मेरी बनादे।
मुझको गले लगा ले-चरणों में तू बिठा ले-
साईं शांति प्रकाश स्वामी-कृपा बनाए रखना-झोली...
२-दीनों के तुम हो दाता-जिसने है तुमसे मांगा-
करते हो आस पूरी-खाली नहीं वो जाता।
मुझको भी दे सहारा-मेरे घर भी कर उजाला-
सपने सजाए बैठा-कर दे तूं आके पूरा।
सोनी को आके साईं-बंशी ज़रा सुनादे-
साईं शांति प्रकाश स्वामी-पूरा करेंगे सपना-झोली...

~❖~ ❧ भजन-११४ ❧ ~❖~

तर्जः:-लोक गीत.....
थलु:-शांति प्रकाश स्वामी दर तेरे आए-दर्शन दो इक बार।
नैनों में करुणा का सागर-मन है बड़ा विशाल॥
१-मांगा जो तेरे द्वार से-तूने दिया है प्यार से।
तेरी शरण में आ गए-लेना क्या संसार से।
प्रेम से बोलो, सत्नाम साक्षी।
रिल मिल बोलो, सत्नाम साक्षी।
ज़ोर से बालो, सत्नाम साक्षी।
सारे बोलो, सत्नाम साक्षी।
जय शांति प्रकाश साईं तेरी सदा ही जय।
मेरे सत्गुरु बाबा, तेरी सदा ही जय॥

२- मन को है तेरे नाम का-मन्दिर मैंने बना लिया।
तेरे चरण की धूल का-माथे तिलक लगा लिया।
काज संवारे, शांति प्रकाश।
कष्ट निवारे, शांति प्रकाश।
पार उतारे, शांति प्रकाश।

जय कल्याण वाले साईं तेरी सदा ही जय।
उल्हास नगर वाले साईं, तेरी सदा ही जय ॥

३- दीपक है तेरे द्वार के-हम फूल तेरे हार के।
सेवा का सुख पा लिया-जीवन अपना वार के।
मन से बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।
ऊँचा बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।
मैं नहीं सुनिया, साक्षी शिवोऽहम्।
गज के बोलो, साक्षी शिवोऽहम्।

जयपुर वाले साईं तेरी सदा ही जय।
अमरापुर वाले साईं, तेरी सदा ही जय ॥

~*~ ❧ भजन-११५ ❧ ~*~

तर्जः-सत्गुरु दीन दयाल छण्डो हण शांति जो.....
थलुः-जाढे वजां थो दिसां मां सत्गुरु शांति प्रकाश।
शांति प्रकाश साईं शांति प्रकाश।

घोरियां जिन्द ऐं जान-सत्गुरु शांति प्रकाश ॥
१-चवे थो भोलेनाथ भण्डारी-काथे आहे सत्गुरु कृष्ण मुरारी।
सींगारियो आ कैलाश-अचे स्वामी शांति प्रकाश ॥
२-चवे थो विष्णू राहूं निहारियां-सत्गुरु लाइ थोअखडियूं विछायां।
सींगारियो आ शेषनाग-अचे स्वामी शांति प्रकाश ॥
३-सत्गुरु उन जे दिल में वसे थो-सिक श्रद्धा जेको प्रेम रखे थो।
ब्रह्मानन्द दियो दीदार-सत्गुरु शांति प्रकाश ॥

तर्जः-भागनि वारा से थई जग में.....

थलु:-सत्गुरु शांति प्रकाश जी महिमा, सब खां न्यारी न्यारी आ ।

१-नण्डपण खां ई शेवा कयाऊँ-तन मन जो अभिमान छुटे ।

जोगु कमाए पाण पचाए-सुहिणी कई जंहिं त्यारी आ ॥

२-संत सचो दर्वेश आ दाता-दिल जो दिलबर दानी आ ।

दया धीरज ऐं समता सां गदु-रहिणी सचु जस वारी आ ॥

३-शांतीअ जो भण्डार सचो साईं-निहठो निमाणो न्याज़ी आ ।

प्रेम जो प्यालो पियारे सभिनि खे-रहिबरु राह रूहानी आ ॥

४-सत्गुरु जो संदेश पहुंचायो-ज्ञान संदी गजकार करे ।

अन्तर्मुख थी ज्ञान ध्यान में-वृत्ति जगत खां न्यारी आ ॥

५-प्यार देई कयो पंहिंजो सब खे-सब कंहिंजो सन्मान कयो ।

त्याग जी मूरत न्याज़ ऐं निवड़त-कृष्ण जां अवतारी आ ॥

६-भजन भोजन जो हलायो भण्डारो-संत सचो उपकारी आ ।

अहिडे सुहिणे संत सचे तां-ब्रह्मानन्द बलिहारी आ ॥

तर्जः-ईचक दाना मीचक दाना.....

थलु:-दाता दिलबर दानी-सत्गुरु शांति प्रकाश त आहे-महिर वसाए ।

प्यार देई सभिनी प्रेमिनि खे-पंहिंजो छदियो बणाए-महिर वसाए ॥

१-सिक सां जंहिं बी याद कयो आ-बेड़ो तंहिंजो पार कयो आ ।

दुखड़ा मिटाए आशूं पुज्राए-पल में पार लगाए-महिर वसाए ॥

२-महिमा महान् आ गुणी गुणवान आ-पर उपकारी सचो वीर विद्वान आ ।

प्रेम जी मिठड़ी मुरली वज्राए-सत्संग मौज मचाए-महिर वसाए ॥

३-त्यागु तपस्या सादगी जंहिंमें-सुहिणी निवड़त न्याज़ हो जंहिंमें ।

मिठड़ी बोली ज्ञान जी गोली-हदरम वियो हलाए-महिर वसाए ॥

४-सूरत जंहिंजी आहे सुबहानी-सिज चण्ड तारनि खां बी लासानी ।

जेको ध्याए शांति पाए-ब्रह्मानन्द सुणाए-महिर वसाए ॥

तर्जः-हमको हमी से चुरा लो.....

थलु:-सत्गुरु स्वामी शांति प्रकाश तूं-संतनि जो आहीं सिरताज तूं।

मुरादूं पूरियूं करीं तूं सभ जूं-पुज्जाई आशूं साईं तूं सभ जूं।

आहियां निर्धन मां साईं धनवान तूं॥

१-मर्यादा तो में-राम जहिड़ी छिठी-

लीला तो में मां श्याम जहिड़ी छिठी।

कयो सभ सां सदा तो प्यारु-सच्ची शेवा करे उपकार।

वधायो शान तो गुरु जो-जपायो नाम तो गुरु जो।

आहियां मूर्ख मां साईं गुणवान तूं॥

२-ताकत मूं में का नाहे-महिमा कहिड़ी मां ग्रायां।

महिर कजो बाबा मूंते नाम जपियां ऐं जपायां।

गुरु भक्ति ज्ञान तोखां-सिखां गुणगान मां तोखां।

कयां अर्पन तन मन धन-सफल मुंहिंजो थिए जीवन।

आहियां निर्बल मां साईं बलवान तूं॥

३-बुढा आश्रम नारी शाला-दवाखाना खोले करे।

गऊशाला गायुनि लाइ-सभिनी ते महिर करे।

आहीं घनश्याम गायुनि जो-सचो रखपाल प्रेमिनि जो।

बुधीं थो दर्द सभ जा तूं-लाहीं थो मर्ज सभ जा तूं।

आहीं शाहन जो शाह बादशाह तूं॥

४-ब्रह्मानन्द सत्गुरु-महिर कयो सभ ते।

प्रेमी अचनि जेके-पार कजो सभ खे।

जपायो साखी ऐं सत्नाम-सचो आ धनगुरु टेऊराम।

सबक सच जो सेखार्यो तो-प्रेम पियालो पियारियो तो।

सचो शांतीअ जो आहीं भण्डार तूं॥

तर्जः-तुम दिल की धड़कन में.....

थलु:-सतगुरु स्वामी शांति प्रकाश-महिर कजो-२

महिर कजो, बाझ कजो, रहिमु कजो, दया कजो ॥

१-निर्धन जो धन आहीं तूं-बेवाहनि जो वसीलो तूं।

दीननि जो दातारो तूं-निर्बल जो बलु आहीं तूं।

करूणा सागर करूणा करे-बार पंहिंजे ते बाझ कजो-बाझ कजो....

२-दाता तुंहिंजे दर ते अची-सिक सां सीसु झुकायां थो।

प्रेम सां तुंहिंजे चाऊंठि ते-नेण खणी त निहारियां थो।

पल्लव मुंहिंजा पास कजो-कम सब मुंहिंजा रास कजो-रास कजो...

३-ज्ञानी गुणी गमटार आहीं-ब्रह्मानन्द मनठार आहीं।

भक्तिअ जो भण्डार आहीं-शांतिअ जो अवतार आहीं।

डोह गुनाह सभ माफ कजो-ऐबनि मुंहिंजनि खे ढकिजो-महिर कजो....

तर्जः-आ लौटके आज मेरे मीत.....

थलु:-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-तोखे अजु याद करे जगु थो।

॥ खणी नेणनि में नीरु अपार-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

१-न्याज़ ऐं निवड़त मिठड़ी आ बोली-ज्ञान जी सब खे दे लोली।

दर ते हज़ारें स्वाली अचनि था-भरे वजनि था झोली।

आहीं महिर कंदड़ मनठारु-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

२-पर उपकार त्यागी वैरागी-ज्ञान गुणनि जी खाणी।

जोगु कमाए पाण पचाए-दिल जो सचो थियो दानी।

सच्ची भक्तिअ जो भण्डार-तोखे अजु याद करे जगु थो ॥

३-प्रेम जी मिठड़ी मुरली वजाए-सब जी दिल खे चोराए।
 मस्त बणाए नाम जपाए-सभनी खे पंहिंजो बणाए।
 तुंहिंजो याद करे उपकार-तोखे अजु याद करे जगु थो॥
 ४-सिज चण्ड तारा रोअनि था सारा-बारिशि पई रात सारी।
 रोअनि पयूं गायूं मर्द ऐं मायूं-धरती रोए पई सारी।
 ब्रह्मानन्द वजां मां ब्रलिहार-तोखे अजु याद करे जगु थो॥

~*~ ❧ भजन-१२१ ❧ ~*~

तर्जः-जहां डाल -डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा...
 थलु:-आयो अमर देश खां अमरु आहे-छा सघंदो मौत त मारे।
 साईं शांति प्रकाश अमरु आहे-२
 १-पियो मोहन वांगुरु मुरली वजाए-साध संगति खे नचाए।
 अजु देश-विदेश जी गलीअ गलीअ में-साख साईंअ जी आहे।
 अजु नण्डो वडो ऐं माई भाई पियो-गुण त साईंअ जा गाए॥
 २-जंहिंजी सुहिणी सूरत मुहिणी मूरत-मिठिड़ो पियो गाल्हाए।
 पंहिंजे प्रेम प्यार सां धारियनि खे भी-पंहिंजो साईं बणाए।
 आहे ज्ञान गुणनि जो सागरु साईं-ज्ञान जी गंगा वहाए॥
 ३-साईं माखीअ मिसरीअ खां भी मिठिड़ो-अहिड़ो बियो ना दिठिड़ो।
 जंहिं सत्गुरु जे चरणनि में तन मन-अर्पन पंहिंजो कयड़ो।
 जंहिं ओट वर्ती साईं टेऊराम जी-ब्रह्मानन्द साख सुणाए॥

~*~ ❧ भजन-१२२ ❧ ~*~

तर्जः-लेके पहला पहला प्यार.....
 थलु:-जेको शरन अचे हिकवार-काटे चौरासीअ जो बार।
 सत्गुरु शांती प्रकाश-आहे मोहन मनठार॥
 १-शांती प्रकाश जहिड़ो सज्जण न कोई-शरन अचे संसार सज्जोई।
 दिए थो सब खे ब्रह्म ज्ञान-जंहिंजी महिमा आहे महान, सत्गुरु.....

- २-शांती प्रकाश जी सूरत धारियो-शरन पयनि जा कार्य संवारियो।
करे नजर सां निहाल-करे सब खे माला माल, सत्गुरु.....
- ३-वचननि जी हिति गंगा वहे थी-रोज अचण सां ज्ञाण पवे थी।
रखियो राणीअ मथां राज-दिनो सुखनि जो साज, सत्गुरु....

~❖~ ❖ भजन-१२३ ❖ ~❖~

तर्जः-सारी सारी रात तेरी याद....

थलु:-स्वामी शांती प्रकाश प्यारो-प्रेमिनि जो सो आहे सहारो।

- १-वाह वाह संत जी आहे रहिणी-कुर्ब सां बुधाइनि वेदनि जी कहिणी।
जुग जुग जीए शल, जोगी जीयारो रे-स्वामी....
- २-मिठडो गाल्हाए सब खे मोहिनि था-गरीबनि बेवाहनि जी सार लहनि था।
सभ सां मिलनि, दुनिया खा न्यारो रे-स्वामी....
- ३-सभ खे समझाइनि कयो जगत जी शेवा-सारी संगति खे खाराइनि मिठडा मेवा।
करे देश शेवा जो, ओनो प्यारो रे-स्वामी.....
- ४-वचन साईअ जा अमोलक आहिनि-सिक श्रद्धा सां जेके गाइनि।
राणीअ वतों गुरुन जो सहारो रे-स्वामी.....

~❖~ ❖ भजन-१२४ ❖ ~❖~

थलु:-कांगल करि का खबर जिते रहनि रहिबर,

सत्गुरु शांती प्रकाश-अमरापुर जा धणी।

- १-नांउ धणीअ जे उदिरु तूं कांगल-जोगी जिते रहनि था।
कां कां कजि तूं कुर्ब मां कांगल-टुकरी तोखे दींदा।
मखण मानी दियांइ-खीरु जानी दियांइ-मुंहिंजा सत्गुरु....
- २-सिक त सज्जण तुंहिंजी डाढी सताए-वेतरि वई आ वधी।
जेतरि आणींदें तूं वरंदी-खबर न हिन संदी।
मुहिब मुकी आ चिठी-डाढी लगी आ मिठी-मुंहिंजा सत्गुरु....

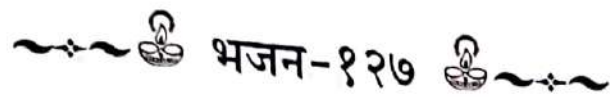
३-पोस्ट खणी आ टपाली आयो-खणी आ आयो न्यापो।
 शेवा सुमरण सत्संग दर्शन-इहो अथव जीअ जियापो।
 आयो लाल लड़ी-दिसी दिलड़ी ठरी-मुंहिंजा सत्गुरु.....
 ४-रातियां डींहं रोअंदे गुजारियां-वसु न बाबल हले।
 चारई तर्फनि आहे अंधारी-चारो कीन चले।
 राणीअ ते रहिमु करि-नूरी नज़र करि-मुंहिंजा सत्गुरु.....

~❖~ ❧ भजन-१२५ ❧ ~❖~

थलु:-साईं शांती प्रकाश जो नालो डाढो मिठो आहे।
 डाढो मिठो आहे डाढो सुठो आहे॥
 १-मुंहिंजे गुरूअ जे वढी आ वढाई-जेको अचे भलि मर्द या माई।
 सभ खे गले पियो लगाए सुहिणो जसु आहे॥
 २-दुई प्यारु सभ खे पंहिंजो बणाइनि-बोले बोल मिठिडा चित था चोराइनि।
 प्रेमिनि लग्ने थो खुद कृष्ण आहिनि॥
 ३-शांती धाम मंदर में अचो श्रद्धा धारे-राधे श्याम टेऊंराम दुख दर्द ठारे।
 माता राणी चवे थी भलि को आजमाए॥

~❖~ ❧ भजन-१२६ ❧ ~❖~

तर्ज:-वो दिल कहां से लाऊं.....
 थलु:-स्वामी शांति प्रकाश प्यारा-जीअ मुंहिंजे जा जिआरा।
 तोखां सवाइ सत्गुरु-रोअनि था नेण नारा॥
 १-तूं आ रूहानी रहिबरु-दाता वढो आहिं दिलबर।
 प्रेम सुधा जो सरोवर-साजन आहियो सूंहारा॥
 २-साईं तुंहिंजूं लख भलायूं-विसरनि नथियूं से वायूं।
 छा छा चई बुधायां-तुंहिंजा अजब निज़ारा॥
 ३-मालिक तूं मुंहिंजे मन जो-बालक मां आहियां तुंहिंजो।
 मूंखे कजो न अहिंजो-रखजो शरण मंझारा॥



तर्जः-परदेसी परदेसी जाना नहीं.....

थलु:-रहिमु मूं ते रहिमु मूं ते रहिम कयो-

रहिम जो घरु आं-रहिम जो घरु आं।

आ गुरु देव प्यारा संगति सहारा-

साईं चक्र शहर वारा ॥

૧-સાવળ મહિનો પૂરણમાસી આઈ આ-

माता जुगल जी झोली थियड़ी साईं आ ।

पिता आसूदे सभ खे दिनी वाधाई आ-

प्रेमिनि जी भी साईंअ आस पुज्जाई आ।

आ गुरुदेव प्यारा.....

२-कलिजुग में अवतार बणिजी आयो आ-२-

संतनि में सिरमोर बणिजी आयो आ-२।

गायुनि जो गोपाल बणिजी आयो आ-२-

गोपियुनि में घनश्याम बणिजी आयो आ -२।

आ गुरुदेव प्यारा....

३-कल्याणीअ जे पंजें नम्बर आस्थान कयो-

प्रेमिनि जो पूरब जन्म जो भागु खुलियो ।

साईं शांती प्रकाश सत्गुरु मिली वयो-

दीननि खे दातार राणी मिली वयो।

आ गुरुदेव प्यारा.....